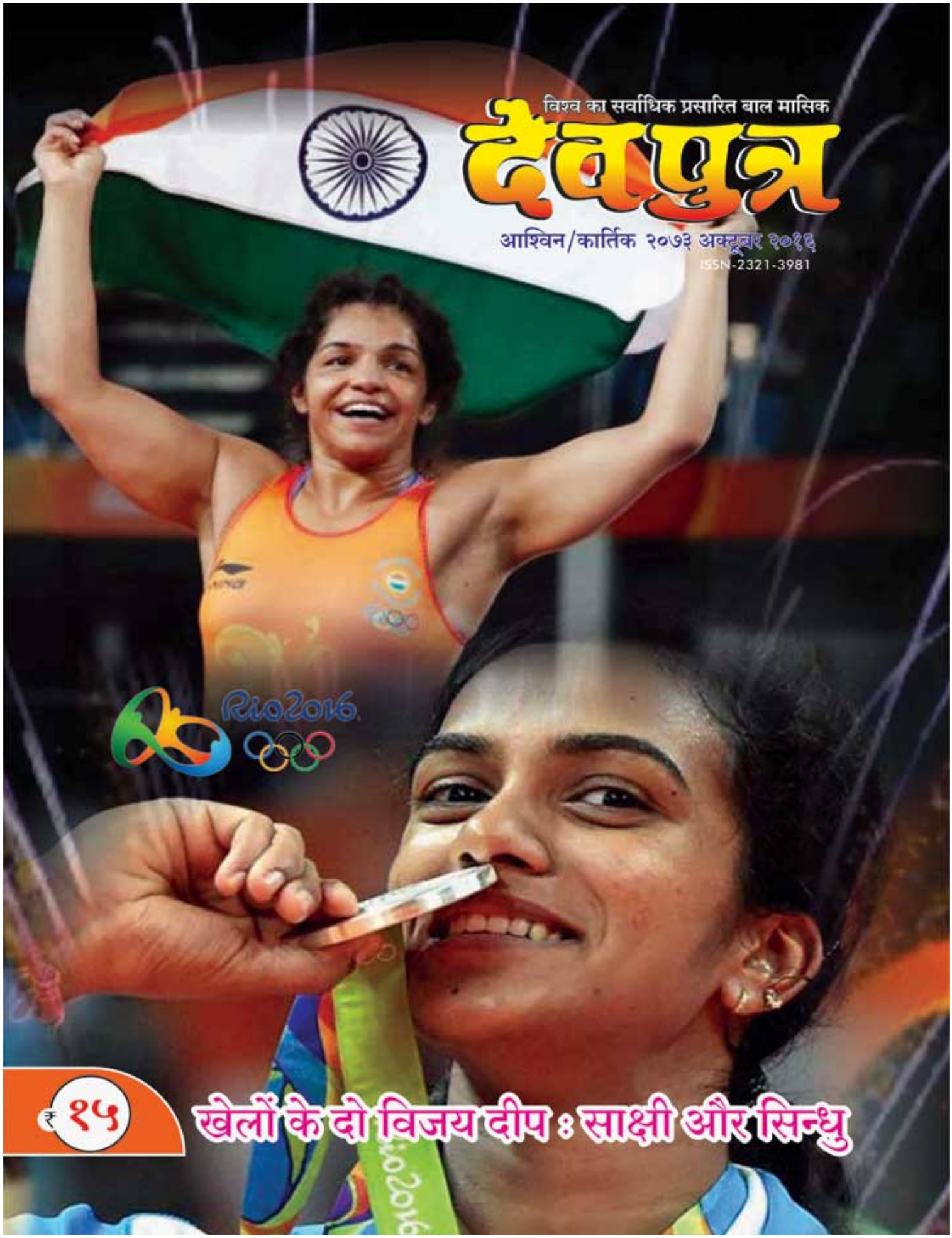

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन/कार्तिक २०७३ अक्टूबर २०१६
ISSN-2321-3981

₹ १५

खेलों के दो विजय दीप : साक्षी और सिन्धु

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Online Test Series

For Preliminary Exam-2016

Get yourself prepared for 7th August, 2016

General Studies & CSAT

Starts from: 24th January, 2016

First test Free for all students

For More Details visit: drishtiias.com

विभिन्न राज्यों से जुड़े
हिंदी माध्यम के IAS टॉपर
क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

Available at your nearest book shop

वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें–
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आश्विन-कार्तिक २०७३ ▪ वर्ष ३७
अक्टोबर २०१६ ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

पिछला माह खेलों को समर्पित रहा। रियो ओलम्पिक खेलों के दौरान सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि इनके परिणामों पर थी। भारत की जनता का हृदय तब बल्लियों उछलने लगा जब भारत माँ की लाड़ली बेटियों पी.वी. सिंधु और साक्षी मलिक ने रजत और कांस्य जीतकर पूरे देश की लाज बचा ली। साथ ही दीपा करमाकर और जीतू राय के प्रयासों को भी प्रधानमंत्री जी ने सराहा यह बहुत उत्साहजनक बात है। हम सबकी ओर से भी चारों को पुनः बधाई! बेटियों के प्रति जो स्नेह भाव नवीन माध्यमों (वाट्स एप, फेस बुक, ट्विटर) पर उमड़ा वह मन को भावुक भी कर गया और आल्हादित भी। इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य कुछ संदेश और ब्लॉग चर्चाएं आत्ममंथन करती भी दृष्टिगत हुई। इन संदेशों में से एक बात मन को ठीक लगी कि प्रायः हम सब बच्चे सामान्य समय में अपनी जीवनचर्या को खेलों के प्रति विमुख करने में लगे रहते हैं। आज भी ''पढ़ोगे लिखोगें बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होओगे खराब'' जैसी कहावतों का असर हमारे मानस पर अंकित है। हमारे अभिभावक भी तुम बाहर खेलने गए तो चोट लग जाएगी जैसे छोटे भय दिखा हमें दो सौ रु. की फुटबॉल न देकर २० हजार का मोबाईल और १० हजार का विडियोगेम थमा देते हैं।

क्या कभी हमने अपनी सी.वी, टेस्ट और परीक्षाओं के अंकों के साथ खेलों के परिणाम भी उतनी ही चिंता या प्रयासों के योग्य समझे हैं?

जितना समय हमने घर के ड्राइंग रूम में बैठकर प्रोजेक्ट बनाने में दिया उतना कभी मैदान पर जाकर खेल के लिए देने का प्रयास किया क्या?

हम आत्ममंथन करें आखिर सबसे अधिक पदक जितने वाला अमेरिका ऐसा देश है जिसका कोई खेल मंत्रालय ही नहीं है। वह अपने खिलाड़ियों को पदक जीतने के बाद कोई धनराशि देने की घोषणा नहीं करता पर हाँ पदक जितने से पहले तैयारी पर करोड़ों डॉलर व्यय कर देता है।

हमारे पहलवानों को कभी 'टर्फ' नहीं मिलता, तो कभी धावकों को जूते नहीं मिलते। इस सबके बाद टी.वी. देखकर टिप्पणी होती है-''भारत के खिलाड़ी सेल्फी लेने और सैर सपाटे के लिए जाते हैं।''

प्रभु ! हमें सद्बुद्धि देना कि मैदानी खेल हमारी शिक्षा का अनिवार्य अंग बन सकें

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- रावण की सीख - डॉ. सेवा नन्दवाल ०५
- संस्कार - सत्यनारायण भटनागर ०८
- अपनापन - कमला प्रसाद चौरसिया १८
- मूर्ख पण्डित और कवि - सतीशचन्द्र टण्डन २१
- कुंदन - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ २४
- जीत का महोत्सव - विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी २७
- दस दिए गायब - प्रभुदयाल श्रीवास्तव २९
- यम दीपक - चित्रेश ३२
- अधिकार -अंतिम भावसार ३८

कविता

- तम का शासन होवे नत - दुलीचंद जैन ०६
- चलो चांद पर - राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' ०७
- तीन जयंतियाँ - राकेश 'चक्र' १५
- आ जाते सूरज भैया - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' २६
- आई दीवाली - अखिलेश जोशी ३१
- बहने रोली लेकर आई - डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी ३६
- बाजार - डॉ. उषा यादव ४३
- खट्टे अंगूर - डॉ. सवित्री चौरसिया ४७
- पटाखे - डॉ. फहीम अहमद ५१

आलेख

- दीपक न्यारे - डॉ. बानो सरताज ११

स्तम्भ

- आपकी पाती - ३७
- हमारे राज्य पशु - ४६
- पुस्तक परिचय - ५०

चित्रकथा

- राम की रामलीला - देवांशु वत्स २०
- दीवाली के पटाखे - देवांशु वत्स ४५

बाल प्रस्तुति

- पहेलियाँ -निशान्त, नेहा, १०
- कविता के नंदादीप - सोनम, अंकिता, निधि, मयंक, पूजा, पूनम ३४
- प्रेरणा वन की जादुई... - विजय वैष्णव ४०

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

रावण की सीख

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

आधी रात के बाद अचानक वरुण की नींद खुली तो रावण के पुतले की याद आई। उसने धीरे से दरवाजा खोला और घर के बाहर खुले में निकल आया। टहलते हुए उस मैदान पर पहुंच गया जहां दशानन का विशाल पुतला आसमान छूने का प्रयास करता प्रतीत हो रहा था। वरुण को आश्चर्य हुआ। रावण जाग रहा था अतः उसने पूछ लिया–''क्यों रावण महाशय! अपने दहन के भय से नींद आंखों से गायब है?'' ''नहीं बच्चे ऐसी बात नहीं, मुझे अपनी नियति पता है। मेरी सांसे बंद होने में अभी कुछ घंटे बाकी है दशानन ने निर्विकार भाव से कहा।

वरुण ने मुस्कराते हुए पूछ लिया–''मैंने सुना है आपके आखिरी समय में भगवान राम की प्रेरणा से लक्ष्मण भी आपसे ज्ञान की बातें सीखने पहुंचे थे?'' ''हाँ, आए तो थे हालांकि उन को सिखाने की मेरी क्या औकात? यह तो उनका बड़प्पन था जो मेरे पास आए थे।''–रावण ने सकुचाते हुए स्वीकारा।

''फिर तो महाशय जी! आपको मुझे भी कुछ सीख देना पड़ेगी।''–वरुण ने कहा। ''तुम दया करो,

वह जमाना और था आज तो ज्ञान का विस्फोट हो गया है। ज्ञान प्राप्त करने के अनेक स्त्रोत सहजता से उपलब्ध हैं, इंटरनेट तो ज्ञान का अथाह सागर हैं।'' रावण ने बताया। ''माना यह सब है फिर भी अपने मुंह से कम से कम एक सीख अवश्य देना पड़ेगी।'' –वरुण ने विनम्रतापूर्वक आग्रह किया।

रावण सोच में पड़ गया–''इतने सारे विषय हैं, किस बारे में तुम्हें बताऊं समझ नहीं आ रहा।'' मेरे विद्यार्थी जीवन के लिए जो आप उचित समझे उनमें से एक बता दीजिए।'' –वरुण ने रावण का रास्ता सुगम किया। रावण ने गंभीर स्वर में कहा–''हालांकि जो मैं बताने जा रहा हूं वह कोई नई बात नहीं लेकिन आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है।'' ''बताइए।''–वरुण सचेत हो गया।

''देखो वत्स! अच्छे कामों को कल पर टालना उचित नहीं होता। हो सकता है एक बार टालने के बाद उनके लिए अवसर न आए।''–रावण ने बताना प्रारंभ किया। ''हाँ मेरे दादाजी कहते हैं...अवसर हर जगह उपलब्ध है, दिमाग और आंखें खुली रखने की जरूरत है। हमेशा ध्यान रखो, एक दरवाजा बंद होते ही दूसरा तुरंत खुल जाता है।''– वरुण ने कहा।

''हाँ बेटे मैंने सोचा था...नरक का द्वार बंद करवा दूंगा, समुद्र का खारा पानी निकालकर उसमें दूध भरवा दूंगा, धरती से स्वर्ग तक की सीढ़ियाँ बनवा दूंगा...पर मैं इन कामों को कल पर टालता रहा और कल कभी आता नहीं, इसलिए समय का सदुपयोग करो, किसी अच्छे काम को कल पर टालो नहीं''–रावण ने अपनी गलती पर पछतावा जताते करते हुए समझाइश दी।

''मेरे दादाजी कहते हैं....समय निरंतर दौड़ रहा है। दुनिया के तमाम सारे पैसे खर्च कर भी बीता हुआ एक पल पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता''– वरुण ने बताया।

''बिलकुल ठीक कहते हैं, अच्छे कामों को टालना बुरा है और बुरे कामों को टालना अच्छा। सीता जी के हरण में मैंने तत्परता दिखाई जबकि वह मुझे टालना चाहिए था।''– रावण ने अपनी करनी पर दुःख प्रकट किया। ''धन्यवाद रावण जी, आपकी यह सीख मैं आजीवन नहीं भूलूंगा और उससे लाभ उठाऊंगा''– वरुण ने वादा किया और घर की ओर लौट पड़ा। सीख देने के संतोष से रावण ने आँखें बंद कर ली।

● इन्दौर (म.प्र.)

विजयादशमी व दीपावली की शुभकामना

तम का शासन होवे नत

कविता : दुलीचंद जैन 'साहित्यरत्न'

मुकुलित विकसित पुष्पों सा
प्रमुदित सबका जीवन हो
बालारुण[१] सी आभा से
पूरित सबके मानस हो
सबकी वाणी में गूजें
निशि दिन चेतनता के स्वर

चिंताओं से धूमाकुल[२]
होवे ना कोई अंतर
उत्साह, शौर्य, कर्मठता के
भाव हृदय में आए
तप और त्याग की सौरभ
से उर कलिका[३] भर जाए

आशा के दीपक से हो
आलोकित जीवन का पथ
जग में फैलाएं प्रकाश
तम[४] का शासन होवे नत

● चेन्नई (तमिलनाडू)

* बालारुण = सुबह का सूरज * धूमाकुल = धुएं से परेशान * उर कलिकाएं = मन की कली * तम = अंधेरा

|| शरद पूर्णिमा ||

चलो चांद पर

कविता : राजेन्द्र कोचला 'अम्बर'

चलो चांद पर चंदू चाचा,
सबको चमचम चमकायेंगे।
चांदी की थाली में हम,
खीर चमकती खाएंगे।
चूहा भैया साथ चलेगा,
चींटी को ले जाएंगे।
चुन-चुन खाती चिड़िया को
चारों ओर नचाएंगे।।
चलेगी चकला गाड़ी चांद पर,
चुन्नू को चिढ़ाएगें।
चांदनी में चहकेंगे सब
चांद के गीत गाएंगे।
चांदी सी होगी चाची,
चाचा होंगे चांदी से।
चांदी का होगा पलंग,
सपने होगें चांदी से।।
चांदी चांदी रजनी होगी,
चौराहे होगें चांदी से।
चूं चूं करती सोन चिरैया,
तिनके होंगें चांदी से।।
चुनिया की चमकेगी चुनरी,
चांद सी होगी बिन्दिया।
खोई-खोई मुनमुन होगी,
चांदी सी होगी निंदिया।।
सपनों में चांदी के घोड़े
आसमान में चमकेंगे।
चांदी से दिल अपने,
चांदी से महल दमकेंगे।।
चलो चांद पर अब तो चाचा,
चांदनी से क्यों चमक रहे हो।
डरना मत तुम चीते से,
चलते चलते क्यों बहक रहे हो।।

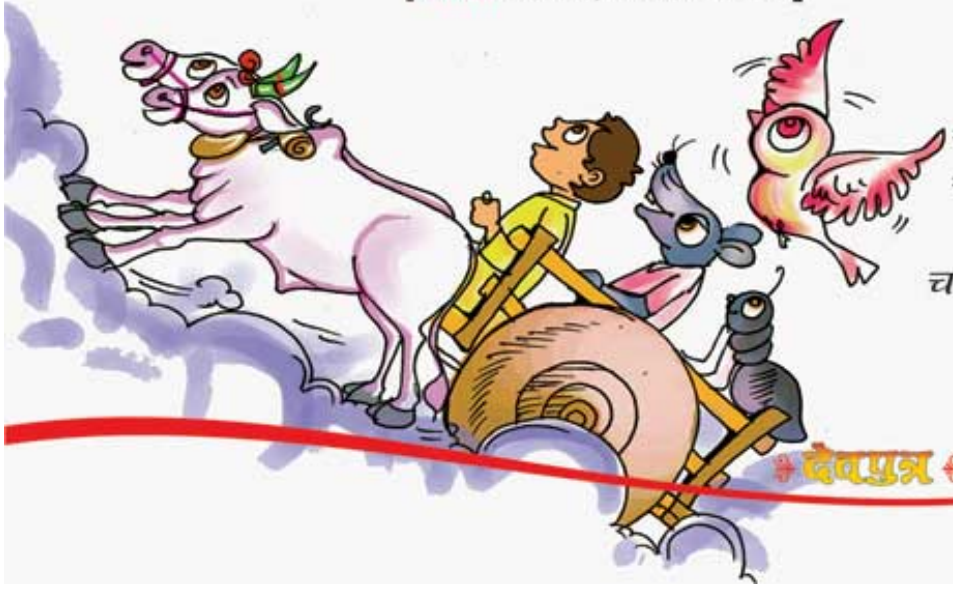

• इन्दौर (म.प्र.)

|| १ अक्टूबर : अ.भा. वृद्ध दिवस ||

संस्कार

कहानी : सत्यनारायण भटनागर

आज श्यामलाल जी बहुत सुबह उठ गए। अभी बाहर अंधेरा है। सुनसान है। घड़ी में पांच बजे हैं। अनु को बड़ा अजीब लगा। खटर-पटर की आवाज सुन वह जाग गया था। अनु सोच रहा था कि आज दादाजी के भी पहले पिताजी क्यों उठ गए हैं। वह बोला कुछ नहीं आंख बंद कर पड़ रहा। थोड़ी देर बाद दादाजी उठ गए। श्यामलाल बोले-''पिताजी! नींद उचट गई। आ ही नहीं रही थी तो सोचा काम में लग जाओ।'' श्यामलाल रसोई में जाकर चाय बनाने लगे।

अभी छह बजे थे कि मकान की घंटी बजी। श्यामलाल जी ने दरवाजा खोला। बहन बहनोई आए हैं। अनु ने बिस्तर में से देखा कि बुआजी फूफाजी आए हैं तो उठा और उनके गले लग गया। दादाजी प्रसन्न हो गए। बोले-''बेटी, आज अकस्मात् कैसे आना हुआ। तुम्हारा तो कोई समाचार नहीं था।'' बुआजी बोली-''कल श्याम भैया से दूरभाष पर बात हुई थी। सोचा चलो मिल आएं।'' श्यामलाल जी ने सबको चाय दी। अब तक अनु बहन शोभा को भी जगा कर उठा लाया था। ''चल बुआजी आई हैं।''

श्यामलाल जी स्नान कर आ गए। तभी घंटी बजी, अनु और शोभा ने देखा काकाजी काकीजी आ गए। उनके साथ महेश व गुड्डी भी है तो पहुंच गए उनके पास। दादाजी ने सुना तो खिल गए सारा परिवार ही आ गया बिना बुलाए। कैसा संयोग है। अनु की माँ अपने नित्य कर्म से निपटकर रसोईघर में नाश्ते का प्रबंध कर रही थी। स्नानघर में सब एक के बाद एक प्रवेश करने के लिए कतार में थे। अभी दादाजी स्नान करने गए हैं। अब दादाजी स्नान के बाद पूजन करेंगे और तब अखबार पढ़ेंगे, यह रोज का नियम है।

अनु ने देखा उसके पिता श्यामलाल जी व काका रामलाल जी मकान के ऊपर वाले बड़े हाल में सफाई कर बिछात बिछा रहे हैं। माँ पूजा की थाली लेकर ऊपर गई है। वहाँ आज भगवान ले जाए जा रहे हैं। उसे लगा आज भगवान की पूजा शायद ऊपर वाले कमरे में होगी। वह कुछ समझा नहीं, यह क्या हो रहा है? प्रतिदिन की अपेक्षा आज सब बदला-बदला नजर आ रहा था।

दादाजी स्नान कर आ गए थे। उन्होंने देखा कि भगवान नियत स्थान पर नहीं है। उन्हें बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने कहा- ''श्यामलाल, आज भगवान कहां चले गए रे? यहां नहीं है।'' श्यामलाल जी मुस्कुराए। बोले-''पिताजी आज बहन, भाई सब आए हैं। सब सामूहिक आरती और पूजा करेंगे तो आनंद आएगा। आप भी ऊपर के हाल में चलिए।''

दादाजी भगवान का नाम लेकर ऊपरी मंजिल पर धीरे-धीरे चले। अनु, शोभा, महेश व गुड्डी भी थे। दादाजी आज परेशान थे। उन्हें बताए बिना भगवान उनके स्थान से हटाए गए। परिवार के सब सदस्य तो नीचे कमरे में सदा से पूजा, आरती करते आए हैं। आज क्या नई बात हो गई?

दादाजी ने ऊपरी कमरे में पहुंच एक लंबी सांस ली और बैठ गए। वे कमरे में पहुंच चकित रह गए। पूरा कमरा साफ-सुथरा था, उसमें बिछात बिछी थी, रंग-बिरंगे फूलों से सजे गमले रखे थे। अगरबत्ती की सुगंध छाई हुई थी। उन्हें लगा, आज जरूर कोई गड़बड़ है। दादाजी ने अनु से कहा-''जा बेटा, पिताजी को बुला ला।''

अनु पिताजी को बुला लाया। दादाजी ने पूछा-

''श्यामलाल आज क्या है? इस हाल को इतना क्यों सजाया है।''

श्यामलाल मुस्कुराए, कालीन बिछाते हुए बोले–''आज आपकी ७५वीं वर्षगांठ है। हमने सोचा इसे धूमधाम से मनाएं, इसीलिए बहन, भाई को भी सपरिवार बुलाया है। मोहल्ले वाले व हमारे मित्र भी आएंगे।''

दादाजी हंसने लगे। ''इस उम्र में और हमारी वर्षगांठ। यह क्या सूझी तुझे?''

श्यामलाल जी ने कहा–''पिताजी, यह एक आनन्द–अवसर है हमारा। हम चाहते है आपका आशीर्वाद इसी प्रकार बना रहे। आप सक्रिय और स्वस्थ रहें। इसके लिए आज सामूहिक प्रार्थना करेंगे।''

बात खत्म हुई और अनु ने देखा काकाजी, ताई जी, काकीजी, दादी को लेकर ऊपर कमरे में आ गए।

दादाजी ने पूजा प्रारंभ की। पूजा के बाद सबने आरती गाई। दादाजी ने एक बड़ा सा दीपक जलाया और बैठ गए। श्यामलाल जी ने कहा–''यह दिन बार–बार आए। जन्मदिवस की शुभकामना पाएं।''

दादाजी व दादीजी अब कालीन पर बैठाए गए। पहले श्यामलाल जी ने उन्हें शाल और पुष्पमाला के साथ कुरता धोती भेंट की, फिर दादी माँ को साड़ी भेंट की। तब बुआजी उठी, उन्होंने फूफाजी के साथ दादाजी को पैंट–कमीज देना चाहा। दादाजी ने कहा–''यह ठीक नहीं है। बेटी को देना चाहिए, हम बेटी से नहीं लेंगे।'' फूफाजी हंसने लगे बोले–''दादाजी, आज तो आपको लेना ही पड़ेगा फिर आप मत लेना। बेटा बेटी में अब भेद नहीं है । आपने तो बेटी को बेटे की तरह पढ़ाया–लिखाया है।'' फूफाजी ने हार पहनाकर दादा–दादी को कपड़े भेंट किए फिर काका ने भी काकी के साथ पुष्पहार पहन कर कपड़े भेंट किए।

अन्नू, शोभा, महेश, गुड्डी आनंद ले रहे थे कि क्या हो रहा है। तब तक तीन थालियों में ७५ दीप जल कर आ गए। अब श्यामलाल जी, बुआ जी, फूफा जी, ताई जी, काका–काकी जी आरती उतार कर दादा–दादी की पूजा कर रहे थे।

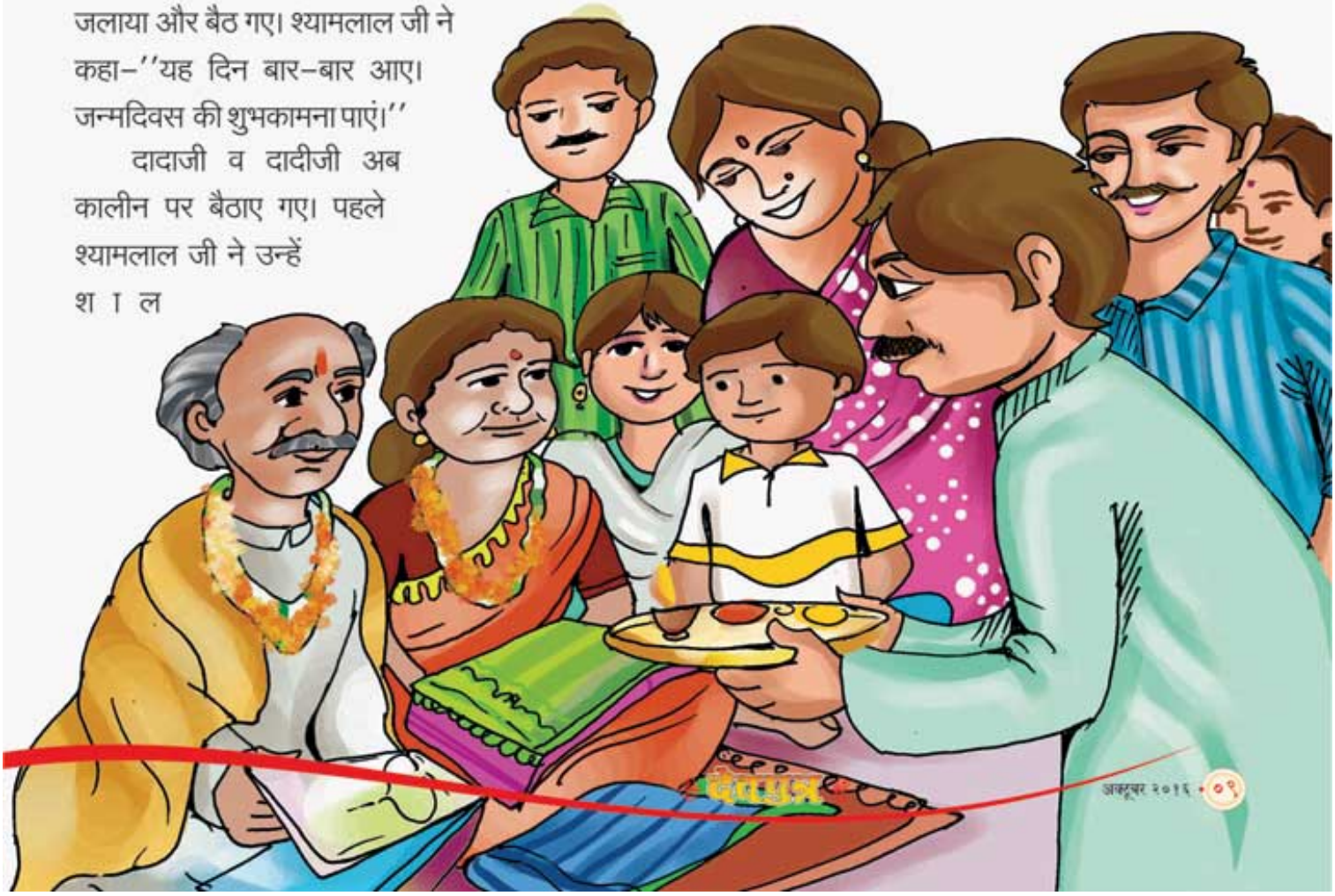

दादा–दादी आज बेहद प्रसन्न थे। आरती उतार कर सबने दादा–दादी के पैर छुए। आशीर्वाद मांगा, तब अन्नू, गुड्डी, महेश और शोभा भी उठे और उन्होंने भी दादाजी के चरण स्पर्श किए। अब तब मोहल्ले के निवासी और मित्रगण भी आ गए थे। सब एक के बाद एक आए। दादाजी के पैर छुए। पुष्प हार पहनाए और कुछ न कुछ भेंट दे गए।

भोलेराम गीता दे गए। मनोहरलाल जी भागवत लाए थे। प्रेमसुख एक पेन लाए थे। पैर छू कर बोले–''दादाजी इससे अच्छी अच्छी कहानियां लिखना।''

दादाजी पुष्पहारों और भेंट सामग्री से लद गए थे। श्यामलाल जी व काका जी ने उन्हें गले से हटाया। दादाजी गद्‌गद हो गए थे बोले–''अब मैं क्या कहूं। मेरा आप सबको आशीर्वाद है। आपका कल्याण हो, आप सबके लिए मंगलकामनाएं।''

मनोहरलाल श्यामलाल से कह रहे थे–''आपने एक अच्छा विचार दिया है। हम भी अपने पिताजी की वर्षगांठ मनाएंगे।''

श्यामलाल जी ने कहा–''आप अवश्य मनाएं। मरने के बाद अपने पूर्वजों का श्राद्ध तो हम करते ही हैं। उनके जीवनकाल में भी हम अपना प्रेम उन्हें क्यों न प्रकट करें। यही हमने किया।''

सब श्यामलाल जी को बधाई दे रहे थे। श्यामलाल जी प्रत्येक को सांध्य भोजन के निमंत्रण का स्मरण करा कर पधारने का आग्रह कर रहे थे। एक प्रेम पूर्ण, भाव पूर्ण, आनंद पूर्ण वातावरण का आभास हो रहा था, जैसे स्वर्ग उतर गया हो।

दादा–दादी बैठे–बैठे थक गए थे। अन्नू, शोभा, महेश, गुड्डी उन्हें सहारा देखकर नीचे लाए। आज उन्हें लग रहा था कि उनको रोज कहानी सुनाने वाले प्यारे दादा–दादी महापुरुष हैं। और वे कार्य की प्रेरणा देने वाले एकमात्र संदेश हैं।

|| बाल प्रस्तुति ||

पहेलियाँ

(उत्तर इसी अंक में)

(१)
ऊँट की बैठक, हिरन की चाल
कौन सा जानवर, जिसका दुम न बाल

(२)
पंछी एक देखा अलबेला
पंख बिना उड़ रहा अकेला
बाँध गले में लम्बी डोर
नाप रहा है अम्बर का छोर
● निशान्त जाटव

(३)
क्वांरी थी तब हरा दुपट्टा,
ब्याह हुआ तब लाल
नैहर जाको गाँव में
शहरों में ससुराल।

(४)
चढ़ चौकी पर बैठी रानी,
सर पर आग वक्ष पर पानी
● नेहा झा

दीपक न्यारे

आलेख : डॉ. बानो सरताज

दीवाली के त्योहार को दीप पर्व अर्थात दीपों का त्योहार कहा जाता है। दीवाली के दीप जले तो समझो बच्चों के दिलों में फूल खिले, फुलझड़ियां छूटी और पटाखे उड़े...क्यों न हो ऐसा? ये सब त्योहार का हिस्सा हैं, आनंद का स्त्रोत हैं।

दीप पर्व अथवा दीवाली क्यों मनाई जाती है? इस के पीछे अलग-अलग कहानियाँ है, अलग-अलग परम्पराएं हैं। कहते हैं कि जब श्रीराम चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् अयोध्या नगरी लौटे थे तब उनकी प्रजा ने मकानों की सफाई की और दीप जलाकर उनका स्वागत किया।

दूसरी कथा के अनुसार जब श्रीकृष्ण ने राक्षस नरकासुर का वध करके प्रजा को उसके आतंक से मुक्ति दिलाई तो द्वारका की प्रजा ने दीपक जलाकर उनको धन्यवाद दिया था।

एक और परम्परा के अनुसार सतयुग में जब समुद्र मंथन हुआ तो धनवंतरि और देवी लक्ष्मी के प्रकट होने पर दीप जलाकर आनंद व्यक्त किया गया।

जो भी कथा हो ये बात निश्चित है कि दीपक आनंद प्रकट करने के लिए जलाए जाते हैं...खुशियां बांटने का काम करते हैं।

भारतीय संस्कृति में **दीपक को सत्य और ज्ञान का द्योतक माना जाता है, क्योंकि वो स्वयं जलता है पर दूसरों को प्रकाश देता हैं।** दीपक की इसी विशेषता के कारण धार्मिक पुस्तकों में उसे ब्रह्मा स्वरूप माना जाता है।

ये भी कहा जाता है कि 'दीप दान' से शारीरिक एवं आध्यत्मिक शक्ति प्राप्त होती है। जहां सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंच सकता, वहां दीपक का प्रकाश पहुंच जाता है।

दीपक को सूर्य का भाग 'सूर्यांश संभवो दीपः' कहा जाता है।

धार्मिक पुस्तक 'स्कंद पुराण' के अनुसार दीपक का जन्म यज्ञ से हुआ है। यज्ञ देवताओं और मनुष्य के मध्य संवाद साधने का माध्यम है। यज्ञ की अग्नि से जन्मे दीपक पूजा का महत्वपूर्ण भाग हैं।

बच्चो, एक कहानी सुनो!

जब सूर्य का जन्म हुआ तब उसने संपूर्ण दिवस संसार को अपने प्रकाश से आलोकित किया। जैसे-जैसे उस के अस्त होने का समय समीप आने लगा। उसे ये चिंता होने लगी कि अब क्या होगा? उसके अस्त होने के पश्चात दुनिया में अंधकार फैल जाएगा। कौन मानव के काम आएगा? कौन उन्हें रास्ता दिखाएगा?

सहसा एक आवाज आई-'आप चिंतित न हों। मैं हूं ना! मैं एक छोटा सा दीपक हूं पर प्रातःकाल तक अर्थात् आप के उदय होने तक मैं अपने सामर्थ्यभर संसार को प्रकाश देने का प्रयत्न करूंगा।'

सूर्य ने संतोष की सांस ली और अस्त हो गया।

दीपक का आरंभ कब हुआ? कहां हुआ? ये निश्चित रूप से कहना कठिन है। अनुमान है कि प्राचीन समय में जब मानव ने अग्नि की खोज की होगी तभी दीपक अस्तित्व में आए होंगे।

आरंभ में घास फूस को बांधकर जलाया गया और प्रकाश प्राप्त किया गया। आग जब जल जाती थी तो जली हुई ही रखी जाती। मशाल के रूप में ये दीपक थे

जो प्रकाश देते थे।

पत्थर के युग में मानव ने प्रथमतः खोखले पत्थरों को दीपक की भांति उपयोग में लाना आरंभ किया। वृक्षों की पतली नर्म छाल को रस्सी की भांति बट कर बाती बनाई जाती।

फिर मानव ने पत्थर और पत्थर की चट्टानों को खोद कर दीये बनाना आरंभ किया। गुफाओं में मूर्तियां एवं चित्र बनाने की प्रक्रिया में पत्थर के ये दीपक सहायक सिद्ध हुए। भारत में अजंता, एलोरा तथा अन्य स्थानों पर गुफाओं में कला के अद्वितीय प्रदर्शन में पत्थर के दीए काम आए।

फ्रांस में विजेरे (Vijere)नदी के किनारे की गुफाओं में पत्थर के दीये प्राप्त हुए हैं।

पत्थर के दीयों के पश्चात् सीप और शंख अस्तित्व में आए। दीपक का आकार बदलता रहा। वृक्ष की छाल बत्ती बनकर प्रकाश देने का काम करती रही।

धीरे–धीरे मानव ने मिट्टी के दीपक बनाना सीख लिया। धीरे–धीरे जैतून, सरसों और शीशम का तेल उपयोग में लाया जाने लगा। सत्य तो ये है कि आज भी सर्वाधिक मिट्टी के दीपक ही प्रचलित हैं।

दीपक की यात्रा की अगली मंजिल थी धातु की खोज। सोना–चांदी, तांबा–पीतल आदि धातुओं को पिघलाकर विभिन्न आकारों के दीपक बनाए जाने लगे। छोटे से छोटे और बड़े से बड़े (६–७ फीट ऊंचे) दीपक तैयार किए जाने लगे। उन्हें संभालने के लिए पीतल की मूठ लगाई जाती थी।

उस काल में बिजली नहीं थी। समृद्ध परिवारों में उपयोग किए जाने के लिए झाड–फानूस तैयार हुए जिनमें एक साथ कई–कई दीपक और मोमबत्तियां जल कर दिन के प्रकाश जैसा प्रकाश देते थे। धार्मिक स्थानों में भी फानूस लगाए जाते थे।

सुन्दर नक्काशी वाले दीपक मंदिरों की छत में लगाए जाते थे। द्वार पर हाथी और शेरों की आकृति वाले दीपक दक्षिण भारत के मंदिरों में आज भी देखने को मिल जाते हैं।

प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के दीयों का उल्लेख मिलता है।

महाभारत में रात्रि के समय जब घटोत्कच से युद्ध हुआ तो दुर्योधन ने सैनिकों को हाथों में जलते हुए दीपक रखने का निर्देश दिया था।

मथुरा, पाटलीपुत्र (पटना), टेक्सिला (तक्षशिला, पाकिस्तान में), अवंतिका (उज्जैन) आदि में खुदाई के दौरान मिट्टी के दीपक प्राप्त हुए थे। टेक्सिला के दीपक कलाकारी के उत्तम नमूने थे। उन में विशेष बात ये थी कि दीपक का निचला भाग ठण्डा रखने के लिए उनमें पानी भरने का स्थान होता था।

हड़प्पा संस्कृति के दीपक बलोचिस्तान में मालनामी स्थान से प्राप्त हुए। वो मिट्टी से बने चौकोर दीपक थे। उन के चारों कोनों में बत्तियां रखने का स्थान था।

मोहन जोदाड़ो में पाए गए दीपक गोलाकार थे। वहां मार्ग के दोनों ओर लगाए जाने वाले दीपक भी प्राप्त हुए थे।

भारत में युनान देश के दीपकों से प्रभावित होकर नाव के आकार के दीपक भी बनाए गए। प्याले के

आकार के दीप तो ५ वीं शताब्दी से पूर्व बनने लगे थे।

इन के अतिरिक्त मंदिर में आरती के समय उपयोग में आने वाले पंच मुखी और सप्तमुखी दीपक भी प्रचलन में थे।

पूजा के समय के दीपक **'अर्चना दीप'** कहलाते थे।

शयनकक्ष में **'निशि दीपक'** प्रयुक्त होते थे।

बंदरगाहों में मार्ग दिखाने वाले **'आकाश दीप'** नाम से जाने जाते थे।

पेड़ों पर लटकाए जाने वाले दीपकों का **'वृक्ष दीप'** नाम था। इन में अनेक टहनियां होती थीं। प्रत्येक टहनी पर दीपक और ऊपरी भाग में किसी देवी–देवता की मूर्ति (केवल सिर) होता था।

घर में त्योहारों का आटे के दीपक काम मे लाए जाते थे।

दूसरों की भलाई के लिए काम में लाए जाने वाले **'नन्दा दीप'** कहलाते थे।

कल्हण की राज तरंगिणी में धनिकों के घरों में मोती माणिक के दीपक मणि दीप इस्तेमाल किए जाते थे।

सुंदर स्त्रियों के रूप में दीपांगना अथवा दीप लक्ष्मी, ऐश्वर्य को दर्शाते थे।

भारत के विभिन्न राज्यों के दीपक अपनी अलग पहचान रखते हैं जैसे– व्याघ्र दीप (ओडिसा), राजलक्ष्मी दीप (बंगला), मयूर दीप (राजस्थान), कनक दीप (बिहार), नागदीप (महाराष्ट्र) बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारत में पुणे (महाराष्ट्र) का केलकर संग्रहालय और ग्वालियर (मध्य प्रदेश) का प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम अपने दीपक संग्रह के लिए प्रसिद्ध हैं।

महात्मा बुद्ध की माता श्री माया देवी के शयनकक्ष में रखा रहने वाला लकड़ी के खंभे पर गांधार शैली में बना हुआ दीपक भारत का सब से बड़ा दीपक है।

मिस्र देश के सम्राट क्लोरस के महल में एक इतना बड़ा दीपक था जिस का प्रकाश दौ सौ मील तक जाता था।

रोम के एक मकबरे (समाधी) से एक ऐसा दीपक प्राप्त हुआ जो दो हजार वर्षों से जल रहा था।

मिस्र के पिरामिडों, रोम और ब्राजील के मकबरों, मैक्सिको की घाटियों, मैसेपोटोमिया की पुरानी कब्रों के भीतर से जलते हुए दीपक प्राप्त हुए थे। कब्रों में मृत शरीरों के साथ जलते हुए दीपक रखे जाने के पीछे ये श्रद्धाभाव था कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा को अंधेरे में भटकना न पड़े।

उस काल में ऐसे प्रतिभाशाली रासायनिक, वैज्ञानिक मौजूद थे जिन्होंने बिना आक्सीजन, बिना तेल के जलने वाले दीपक बनाए जो वर्षों तक जलते रहे। आधुनिक वैज्ञानिक ये मानते हैं कि सोडियम एंटीमनी, सोना, पारा, प्लेटीनम और गंधक को मिलाकर वो रसायन तैयार किया जाता था।

आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के कुछ वैज्ञानिकों ने इस संबंध में कई प्रयोग किए। उन्होंने मीथाइल, अल्कोहल और फास्फोरस सल्फाइड का मिश्रण तैयार करके दीपक में भरा पर दीपक तीन महीने से अधिक न जल सका। उनके समस्त प्रयोग निष्फल हुए।

अब कुछ और आश्चर्यजनक दीपों की कहानियां सुनिए–

१८०४ में इटली के सिसली टापू के एक गांव में एक किसान के खेत में एक मकबरा मिला। मकबरे की छत और द्वार सीसा एवं अन्य धातुओं के मिश्रण से बंद किया हुआ था।

जब छत तोड़ी गई तो सब ये देखकर स्तंभित रह गए कि मकबरा रोशन था। लाश के सिरहाने एक मर्तबान में रखा हुआ दीपक जल रहा था। कई लोग तो इसे भूतों की कारस्तानी समझ कर भाग खड़े हुए। किसी ने साहस करके मर्तबान तोड़ डाला। मर्तबान के टूटते ही दीपक बुझ गया। मकबरों से मिले कागजों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वह दीपक सैकड़ों वर्षों से जल रहा था।

इतिहासकार विलियम कामडेल ने मैसेपोटोमिया के एक मकबरे में पाए जाने वाले प्रज्वलित दीपक संबंधी जानकारी देते हुए लिखा– ''उस दीपक में तेल के स्थान पर पिघला हुआ सोना भरा था।''

इससे ये निष्कर्ष निकला कि प्राचीन काल के रसायन शास्त्री सोने को एक ऐसे मिश्रण में परिवर्तित करने की कला से परिचित थे जो वर्षों तक दीपक को प्रज्वलित रख सकता था।

इतिहासकार लायंस बैन ने अपनी पुस्तक मैक्सिको की संस्कृति में देवी के एक मंदिर में पाए जाने वाले दीपक के बारे में लिखा है– ''वह दीपक मिट्टी का बना हुआ था जो आपस में जुड़े हुए दो बर्तनों में बंद था। एक बर्तन पर सोने की तो दूसरे पर चांदी की परत चढी हुई थी। तेल के स्थान पर एक अपरिचित मिश्रण भरा हुआ था। उन बर्तनों पर लिखी हुई जानकारी से ज्ञात हुआ कि किसी राजा ने देवी आगस्टा को वो दीपक श्रद्धा स्परूप पेश किया था और जो वर्षों से रोशन था।''

सेंट आगस्टाइन ने सौंदर्य की देवी वीनस के मंदिर मे जलने वाले दीपक का उल्लेख किया है, जो न जाने कितने हजार वर्षों से जल रहा था।

● चन्द्रपुर (महा.)

जानो पहचानो

* ये महर्षि कश्यप के पौत्र वरुण के पुत्र व भृगु के भाई थे।

* तपस्या में ऐसे लीन रहे कि शरीर पर दीमकों ने घर बना लिया पर उनका ध्यान नहीं टूटा।

* देवर्षि नारद की प्रेरणा से इनके द्वारा रचा गया महाकाव्य संस्कृत की ऐसी अद्वितीय रचना थी जिसका आधार लेकर अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उस विषय पर काव्य रचे गए।

* उन्हें लौकिक छन्द का प्रणेता कहा जाता है इसी से वे आदिकवि कहलाए।

* मान्यता है कि अपना लिखा पूरा महाकाव्य बच्चों को सिखा कर उसी महाकाव्य के मुख्य नायक के सम्मुख उसकी प्रस्तुति करवाने का अद्भुत घटनाक्रम इन्हीं से सम्बन्धित है।

* बिहार के चंपारण के भैंसा लोटन गांव में इनका आश्रम था।

* एक मान्यता के अनुसार पहले ये एक डाकू थे और हर बात उलटकर कहने में इन्हें रस आता था। इनके जीवन का उत्थान भी भगवान का उल्टानाम जपने से ही हुआ।

बताओ शरदपूर्णिमा को जिनका जयन्ती दिवस है कौन है वे महर्षि?

(उत्तर इसी अंक में)

।। तीन जयंतियाँ:तीन कविताएं ।।

कविता : राकेश 'चक्र'

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी पिता हमारे
सत्य अहिंसा के रखवारे।
दो अक्टूबर जन्म दिवस पर,
करें नमन उनको हम सारे।
भारत को आजाद कराया।
था बापू का दर्जा पाया।

लाल बहादुर शास्त्री

लाल बहादुर शास्त्री
सरल आदमी की पहचान
लाल बहादुर बड़े महान
दो अक्टूबर है जन्म दिवस
याद करे यह हिन्दुस्तान
थे प्रधानमंत्री महान वे
अपने भारत की थे शान

सरदार वल्लभभाई पटेल

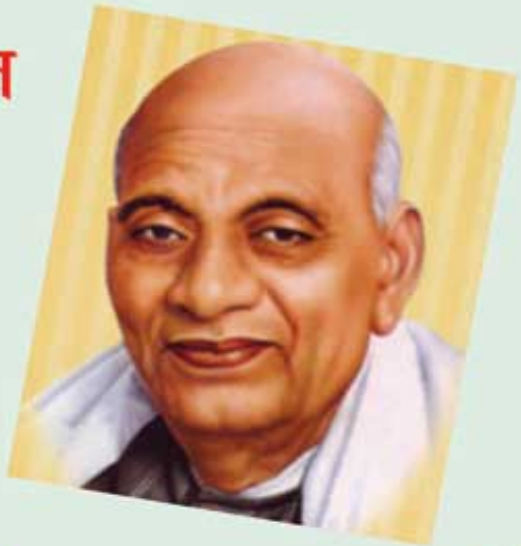

हिन्दोस्तां को एक कर गए
ऐसे थे सरदार पटेल।
देश की खातिर अमर हो गए
प्यारे थे सरदार पटेल।
जन्म दिवस इक्तीस अक्टूबर
याद रहें सरदार पटेल।
सबको न्याय दिलाने वाले,
नेता थे सरदार पटेल।

शब्दक्रीडा(२२)

शस्त्र पूजा

बच्चो! हमारी संस्कृति में शस्त्र और शास्त्र समान रूप से महत्त्वपूर्ण माने गए है कहते है **शस्त्रों से रक्षित राष्ट्र में ही शास्त्रों का चिंतन संभव है।** हमारे सभी देवी देवता शस्त्रधारी है। शब्दक्रीड़ा में इस माह आपको दस प्रमुख देवी देवताओं के नाम और उनके प्रधान शस्त्र-अस्त्रों के नाम ढूंढना हैं। १० जोड़ी बनाने वाला उत्तम बुद्धि, ८ जोड़ी बनाने वाला मध्यम व ५ जोड़ी बनाने वाला सामान्य बुद्धि माना जाएगा। नाम ढूंढने के लिए आपको किसी भी दिशा में क्रमबद्ध अक्षरों को जोड़ना है।

यह भी करें- इनमें से कौन से आयुध शस्त्र (हाथ में पकड़कर वार करने योग्य) और कौन से अस्त्र (फेंक कर मारने योग्य) है या कुछ जो दोनों ही है।

क्या आप बता सकते हैं- इन शस्त्रों को धारण करने के कारण इन देवों का कौन सा विशेष नाम भी पड़ा।

(सही उत्तर इसी अंक में)

म	क्र	न	य	अं	कु	द	प	ध	प	शू	दु
श	हे	ग	कु	मा	ण	के	णे	र	वा	ल	त
नु	ण्ड	श	ज	च	य	त्रि	शु	श	शु	हे	ल
व	रा	म	णे	बा	वि	रा	ज	श्री	अं	नु	ह
ष्णु	ज्र	ण	अं	ग	म	रा	श्री	ष	इ	नु	बा
ध	ष्णु	ह	दा	ज	म	र्ति	त्रि	म	मा	ष	य
का	नु	रा	म	य	नु	शू	शु	न	रा	ब	का
प	शु	ष	ध	शु	ल	न्द्र	म	के	र्गा	र्ति	र्गा
ष्णु	र्ति	र्गा	बा	र्ति	शू	दु	र्गा	दा	के	र्त्ति	वा
त	व	वि	ग	ण	का	र	ल	य	शु	का	र
द	ण्ड	ध	ष्णु	ण	दा	च	बा	य	य	ष	इ
ण	त	त्रि	प	ज्र	दा	क्र	नु	व	ल	न्द्र	ग

अधूरा चित्र पूरा करो

• राजेश गुजर

बच्चो, एक चित्रकार ने १२ अलग-अलग टुकड़ों में रावण, कुंभकर्ण एवं मेघनाद की तस्वीरें बनाई, लेकिन उन्हें एक साथ सभी टुकड़ों को जोड़ नहीं पाया आप ही इन्हें जोड़ो।

(उत्तर इसी अंक में।)

।। १अक्टूबर : रक्तदान दिवस ।।

अपनापन

कहानी : कमलाप्रसाद चौरसिया

बजरंगबहादुर, हाँ अच्छी तरह याद है, जब वेदप्रकाश ने उसक नाम पूछा था तो उसने अपना यही नाम बताया था। वह हकबकाया सा अस्पताल में घूम रहा था। अस्पताल के इस विभाग में, और फिर उस विभाग से इस विभाग में घूमता हुआ वह पुनः वहीं आकर खड़ा हो जाता जहाँ वेदप्रकाश अपने तीनों भाइयों और पिता के साथ चिन्तित बैठा था। चारों के चारों एक दूसरे को निहार तो रहे थे किन्तु कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा था। अपनी तरह बजरंग बहादुर को परेशान और उद्विग्न सा देखकर वेदप्रकाश से रह न गया। पूछ बैठा– ''क्या हो गया भाई! कुछ गुम गया क्या? किसे ढूँढ रहे हो? इस तरह व्यग्र क्यों हो?''

''मुझे याद नहीं आ रहा है, मुझे किससे मिलने यहाँ आना था। काम बहुत जरूरी था। उसे मेरी सहायता की बहुत आवश्यकता थी'' – बजरंग ने उत्तर दिया और आगे बढ़ गया। थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे न जाने क्या सूझा कि वह वापस आया और वेदप्रकाश के सामने आकर खड़ा हो गया। वेदप्रकाश अचंभित रह गया। उसने पूछा–''याद आ गया! बताओ तो किस वार्ड की तलाश में हो। हो सकेगा तो मैं कुछ सहायता कर सकता हूँ। इसी सोच–विचार में बैठा हूँ। सोचता हूँ, यहाँ से कुछ क्षण किसी के साथ टहल लूँगा तो मन सुस्थिर हो जाएगा।''

बजरंग ने उसकी ओर ध्यान से देखा। लगा तो नहीं कि कहीं देखा है किन्तु समझ में आ गया कि वे सब किसी परेशानी में है। उसने मित्रभाव से उसके कंधे पर हाथ रखा– ''बंधु, मुझसे अधिक आप लोग परेशान प्रतीत हो रहे हैं। आप किसी गंभीर सोच–विचार में हैं। आप मेरी सहायता करना चाहते हैं, यह तो बहुत अच्छी बात है किन्तु मुझे याद आए तब न। अब आप बताइए, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?''

वेदप्रकाश सोच में पड़ गया–यह आदमी तो इतना भला है कि मेरे ही गले पड़ गया। मेरी सहायता करना चाहता है। अपनी जरूरत बता दूँगा तो इसके होश उड़ जाएँगे। उसे टालते हुए बोला–''आप व्यर्थ हमारे लिए परेशान न हों। जाइए, उसे ढूंढिए जिसे आपकी जरूरत है।

बजरंग मुस्कुरा दिया–''आप मुझसे इस तरह परायों की तरह क्यों पेश आ रहे हैं? मुझे अपना ही समझिए। बताइए तो सही, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?'' इसके पहले कि वेदप्रकाश कुछ कहता, वार्ड में से नर्स निकली और डॉटते हुए बोली– ''आप लोग इसके सगे हैं। इस स्त्री के बेटे हैं। हट्टे कट्टे

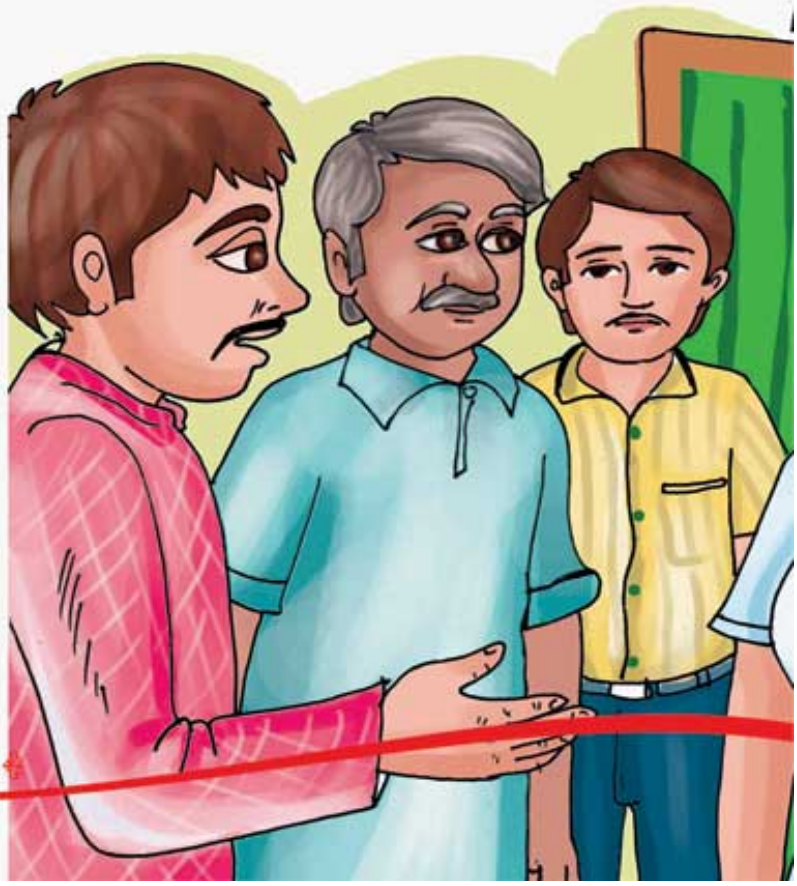

पहलवान हैं। उसकी जान बचाने के लिए खून नहीं दे सकते और आने वाले अगले भाई के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप लोगों की समझ में क्यों नहीं आता कि कहीं आपके लिए नए भाई को जन्म देने के पहले ही वह चल बसी तो क्या होगा?''

बजरंग को समझते देर न लगी। नर्स से बोला– ''इनसे मत उलझिए। बताइए कि माँ को मैं अपना खून दे सकता हूँ।''

नर्स ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, उसके सगे बेटे और पति ने तो खून देने के लिए तैयार नहीं, उन्हें लगता है कि खून देने से वे कमजोर हो जाएँगे। तुम क्यों परेशान हो रहे हो।''

''मुझे याद आ गया दीदी।'' बजरंग ने नर्स से कहा–''ये सब अपने ही लोग हैं। मैं यहां खून देने के लिए ही आया था। मेरी दीदी यहीं किसी अस्पताल में भर्ती है। उसे खून की आवश्यकता है। उसे समय पर खून नहीं दिया गया तो कुछ भी हो सकता है। यहाँ तो कई अस्पताल हैं। मैं अस्पताल का नाम ही भूल गया।

उसे मदद करने के विचार से आया था। तभी उसे दूर से उसकी अपनी सगी बहिन आती दिखाई दी। वह स्वस्थ थी। अच्छी तरह चल रही है। उसे देखते ही बोल उठी– ''देर आए, दुरुस्त आए। बजरंग भैया इन सबको व्यर्थ ही सोच में डाल दिया। इन तीन दिनों में लगातार सोचती रही और प्रार्थना करती रही ईश्वर से कि इन लोगों को खून देने की आवश्यकता न पड़े, ऐसा कुछ कर दे प्रभु। अच्छा हुआ तू आ गया। तुझमें बड़ी हिम्मत है। मन से तो सबल है ही। इन लोगों की माँ को खून की जरूरत है, तू इन्हें अपना खून दे और नाम लिखा कि जब–जब किसी माँ को खून की जरूरत होगी, तू बेहिचक दौड़ा चला आएगा। तेरी इस पहल में उन लोगों को तो सद्बुद्धि प्राप्त हो सकेगी जो अपनी ही जन्मदाता को खून देने से हिचकिचाते हैं। देर मत करो। जाओ नर्स के साथ वार्ड में। मरीज को खून की जरूरत तभी होती है, जब वह गंभीर हालत में होता है। देर करना ठीक नहीं। मैं चलता हूँ। गाँव में सब इंतजार कर रहे होंगे। बच्चे हींड़ रहे होंगे, सो अलग।''

बजरंग इशारा पाते ही नर्स के साथ चला गया। खून देकर आया । माँ के स्वस्थ होने का समाचार मिलने तक वहीं प्रतीक्षा करता रहा। जाने लगा तो वेदप्रकाश के पिता ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा–''बहुत बहुत धन्यवाद बेटे! यदि तुम साहस न करते तो मैं कहीं का न रहता। तुम्हें जब भी किसी चीज की आवश्यकता हो, बेधड़क मेरे पास जा आना। मैं तुम्हें कभी निराश नहीं करूँगा।''

''मुझे धन्यवाद मत दीजिए काका। मुझे संतोष है कि मैं किसी के काम आ सका। सगे होने के कुछ नहीं होता। आप सब मेरे अपने हैं। अपनापन बनाए रखिए। मेरे लिए सब कुछ करना ही चाहते हैं तो मेरी इच्छा है कि आप इन्हें समझाइश दीजिए कि समय–समय पर रक्तदान कर मानवता की सेवा करें। मन में भाव बनाए रखें कि रक्तदान कर वे अपनी माँ की सेवा कर रहे हैं।''

● भोपाल (म.प्र.)

राम की रामलीला

चित्रकथा - देवांशु बत्स

मूर्ख पण्डित और महाकवि

कहानी : सतीशचन्द्र टण्डन

पुरानी बात है। एक बार राजा भोज ने ढिंढोरा पिटवाया जो भी कोई सर्वांगपूर्ण कविता रच कर सुनाएगा उसे एक लाख मुद्राएं पुरस्कार मिलेंगी। अंतिम निर्णय महाकवि कालिदास करेंगे।

बस, फिर क्या था। दरबार में कवियों का जमघट लगने लगा, पर पुरस्कार कोई न पा सका।

एक दिन एक मूर्ख पण्डित की पत्नी ने कहा– ''सुनो जी, क्या आप एक लाख का पुरस्कार नहीं पा सकते। जाइए, सुना आइए कोई कविता राजाभोज को। हो सकता है, आपकी ही कविता उन्हें भा जाए और हमारे दुःख दारिद्रय दूर हो जाएं।

''अरे, भागवान, मुझे कहां मिलेगा पुरस्कार?'' पण्डित ने आनाकानी की। ''नहीं, नहीं। हाथ पर हाथ धरे बैठने से काम नहीं चलेगा, अपनी बुद्धि की बग्घी दौड़ाओ और कोई कविता रच डालो।'' पत्नी ने पुनः दबाव डाला।

''ठीक है, प्रयत्न करता हूँ।'' पण्डित ने हामी भरी।

पण्डित जी के लिए विषय के चुनाव में भी कोई दिक्कत नहीं आई। हुआ यह कि कुछ देर पहले पण्डिताइन दूध की रखवाली का काम सौंप कर मंदिर गई थी। पर निखट्टू पण्डित जी को झपकी आ गई और इस बीच बिल्ली दूध पी गई थी। उन्हें काफी डाँट–फटकार सुनने को मिली थी।

बस, पण्डित जी ने तय कर लिया कि कविता का विषय दूध और बिल्ली ही रहेगा।

फिर पण्डितजी चलते–चलते जा पहुँचे दरबार में। देखा बड़े–बड़े विद्वान कवि अपनी कविता सुनाकर बैठ गए, पर

कोई कविता न राजा भोज को पसंद आई न महाकवि कालिदास को। सर्वांगपूर्ण कविता की कसौटी पर कोई भी कविता खरी नहीं उतरी।

यह सब देखकर पहले तो पण्डित जी को पसीना छूट गया, पर बाद में उन्होंने अपना खोया हुआ साहस बटोरा। आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढे और सिर झुका कर बोले-''महाराज, मेरी भी कविता सुन ली जाए, शायद मेरी ही भाग्य में पुरस्कार लिखा हो।''

आदमी अपनी बातचीत और व्यवहार से ही पहचाना लिया जाता है। राजाभोज समझ गए कोई काठ का उल्लू है।

पर औपचारितावश राजा भोज बोले-''कविवर, स्वागत हैं आप अपनी कविता का पाठ करें।''

पण्डित जी तार स्वर में कविता पढी, **दुग्धं पिबति बिडालः।** और उन्होंने चुप्पी साध ली। आगे की कोई पंक्ति उन्होंने रची नहीं थी।

''आगे सुनाइए।'' किसी ने कहा।

पर पण्डित जी ने सिर हिला दिया-''कविता पूर्ण हो गई।''

अंततः महाकवि कालिदास बोले-''मूर्खाधिराज, यदि यह कविता है तो इसमें रस भी होना चाहिए।

पण्डित जी तड़ से बोले-''मूर्ख मैं हूँ या आप? बताइए, दूध रस नहीं है तो क्या है?

''कविता में चार चरण होते हैं। तुम्हारी कविता में नहीं हैं। इसे मैं कविता कैसे मान लूं?'' महाकवि कालिदास टालने की गरज से बोले।

पण्डित जी न मालूम कैसे वाचाल हो उठे-''श्रीमान जी! आप सत्यता से काम लीजिए। इस दरबार में सारे लोग उपस्थित हैं। कोई भी मुझे बताए कि क्या बिल्ली के चार नहीं तीन चरण होते हैं?

महाकवि कालिदास खिलखिलाकर हंसने लगे। राजा भोज भी हँसते हँसते लोटपोट हो गए।

पर पण्डित जी का भाग्य खुल गया। राजाभोज ने मनोरंजन के लिए उन्हें एक लाख मुद्राएं देकर बिदा किया।

● **इलाहाबाद (उ.प्र.)**

कविता बनाइए २२

बच्चो !
दिए गए चित्र पर सुन्दर सी
चार पंक्तियों की
कविता बनाकर भेजिए।
चयनित कविता
दिसम्बर अंक में प्रकाशित
की जाएगी।

बताओ कौन हैं छोटे से बड़े

रावण के पुतले खड़े भिन्न भिन्न आकार
कौन यहाँ किससे बड़ा पता लगाकर मार

(उत्तर इसी अंक में।)

|| १० अक्टूबर : मानसिक विकलांग दिवस ||

कुंदन

कहानी : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

कनिष्क मानसिक रूप से अविकसित था। छोटा भाई कुंदन सचमुच कुन्दन था अर्थात् शुद्ध सोना। दोनों भाई एक ही माँ की कोख से पैदा हुए थे पर दोनों दो तरह के थे। कनिष्क मोटा–ताजा था, कुन्दन दुबला और छरहरे बदन का। कनिष्क साँवला था, कुन्दन गोरा। कनिष्क की आँखें छोटी थीं और कुन्दन की बड़ी–बड़ी। कनिष्क के होंठों पर कभी हँसी नहीं आती थी, जबकि कुन्दन के होंठों पर हमेशा हँसी खेलती रहती थी। वह खेलों में भी रुचि लेता था। कनिष्क तो खेल के मैदान में जाता तो धर–पटक करने लगता। उसको कभी–कभी ऐसा जुनून सवार होता कि किसी भी बच्चे पर पत्थर फेंक देता, चलते चलते ठोकर लगा देता या उसे उठाकर जमीन पर पटक देता। आए दिन उसकी शिकायतें आती रहती थीं।

एक दिन कुंदन ट्रांजिस्टर बजा रहा था। उसकी माँ ने थाली परोस कर रख दी थी तो वह गीत सुनते–सुनते खाना खा रहा था। तभी न जाने किधर से कनिष्क वहाँ आ गया। कुंदन उठकर ट्रांजिस्टर को हटाना चाहता था, परन्तु एक ही पल में कनिष्क ने उसको कसकर पकड़ा, घुमाया और आँगन में जोर से फेंक दिया। ट्रांजिस्टर टूट गया। उसके पिताजी ने कनिष्क के दो थप्पड़ लगा दिये। तीसरा थप्पड़ मारने वाले थे पर कुंदन ने उनका हाथ पकड़ लिया–''नहीं पिताजी, भाई साहब कुछ नहीं समझते वे कर जाते हैं। इतनी समझ ही नहीं है।''

पिताजी का उठा हुआ हाथ रुक गया। कनिष्क के प्रति उनका गुस्सा तो कम नहीं हुआ पर कुंदन पर उन्हें बहुत प्यार आया।

कनिष्क में एक और बुरी आदत थी। वह बहुत खाता था, हर समय खाता था। घर में कोई भी चीज रखी हुई देख नहीं सकता था। बिस्कुट का पूरा पैकेट एक ही बार में खा जाता था। फ्रिज में से सेब, अमरूद, आम, पपीता, सभी फल खाकर जब तक खत्म नहीं कर देता तब तक चैन नहीं लेता था। काटने का सब्र नहीं था। कुंदन अपना काम छोड़कर उसे खरबूजा आदि फल काटकर देता फिर भी एक फाँक भी अपने मुँह में नहीं रखता था। कुंदन को देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई छोटी चिड़िया बड़ी चिड़िया के मुँह में दाना डाल रही हो। कनिष्क छिलके इधर–उधर फेंक देता तो कुंदन उन्हें उठाकर कूड़ेदान में फेंक आता। वह उसके कपड़े ठीक कर दिया करता था। दोनों की माँ एक कार दुर्घटना में घायल हो गई थी। उनके पिताजी ने बचाने की बहुत कोशिश की। अस्पताल में दाखिल कराया, बहुत सेवा की, फिर भी काल से वे अपनी पत्नी को नहीं बचा सके। कनिष्क तब पाँच वर्ष का और कुंदन तीन वर्ष का था। उनके पिताजी को अपनी पत्नी के चले जाने का बहुत दुःख था। वे मन ही मन कहते–'काश, उस कार दुर्घटना में मैं ही मर जाता।' माँ तो हर दशा में अपने बच्चों को प्यार से पाल लेती है, पर बाप नहीं पाल पाता।

दो वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हो गए। बच्चों की

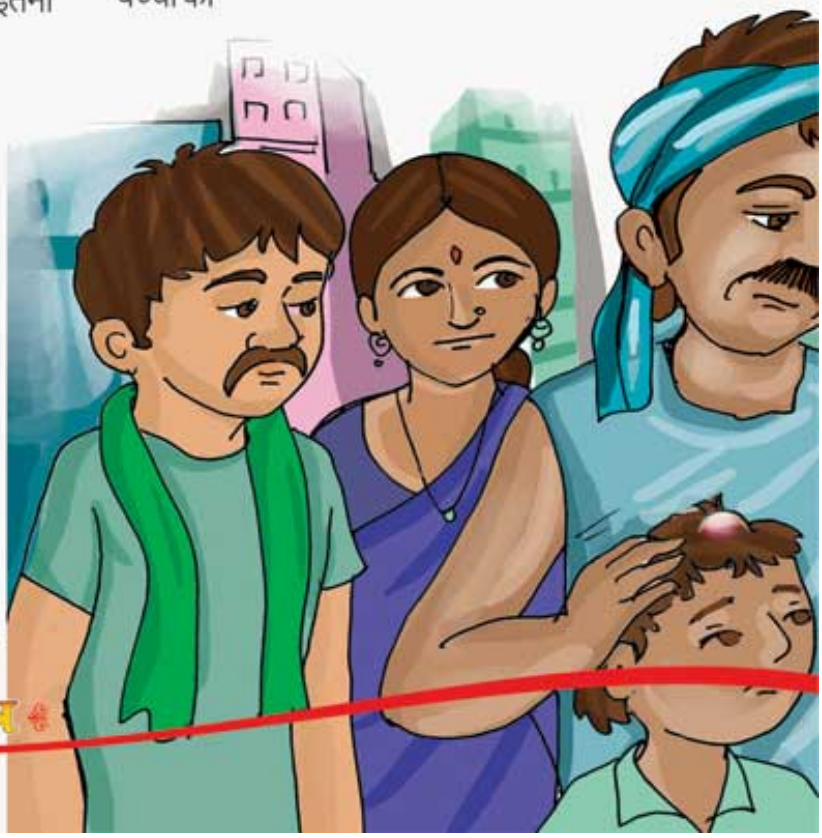

दादी थीं तब तक कुछ विशेष अभाव नहीं खला, परन्तु शायद बहू के शोक में वे भी परलोकगामी हो गईं। तब हर बात की परेशानी होने लगी। आखिर एक दिन कनिष्क और कुंदन की विमाता का घर में पदार्पण हुआ। तब कुंदन पाँच वर्ष का था। वह अपनी माता से शीघ्र ही घुलमिल गया, पर कनिष्क अविकसित बालक होने पर भी नई माँ की हर बात का विरोध करता था। उसके मना करने पर भी बाहर निकलकर ऊटपटाँग हरकतें करता। नहाने के लिए कहती तो दूर भाग जाता। गंदी जमीन पर पसर कर बैठ जाता। मना करने पर वहीं लोट जाता। पढ़ने की पुस्तकें फाड़ देता और कुंदन को बिना किसी बात के पीट देता। यह उसकी रोज की कहानी थी। माँ हैरान थी। पहली पत्नीके वियोग में दुःखी पति को सँभाले या इस विद्रोही राजकुमार को, वह समझ नहीं पाती थी। घर का सारा काम करने के बाद भी उसे संतोष नहीं था कि वह गृहिणी का कर्तव्य पूरा कर रही है। मन पर एक बोझ रहता था। कनिष्क उस बोझ को और बढ़ा देता, पर पति के वापस आने तक सभी समाप्त हो जातीं। डिब्बे के डिब्बे, पैकेट के पैकेट घर में से खोज-खोज कर कनिष्क ही खा जाता था। कुछ न मिलता तो माँ को ही मारने लगता- ''मुझे भूख लगी है, खाना खाऊँगा।'' वह बेचारी उसी समय कुछ न कुछ बनाकर देती। पेट में दर्द हो जाता, ज्वर हो जाता, पर वह नहीं मानता।

पिता ने मानसिक रोग से अविकसित बच्चों के विद्यालय में उसका प्रवेश करा दिया। वहाँ दो पुरुष शिक्षक थे जबकि मालती खरे नाम की एक महिला भी थी। वह कनिष्क को बहुत प्यार करने लगी थीं। उसे पढाती, तरह-तरह के उपायों से गिनती सिखाने की कोशिश करतीं तो वह थोड़ा बहुत लिखना-पढना सीख गया था। पर छुट्टी वाले दिन क्या करे। फिर उस पर वही धर-पटक करने वाला जुनून सवार हो जाता। कुंदन उसके इस भाव को जान जाता और उसका पीछा करता। कई प्रकार के खतरों से और प्रहारों से वह उसे बचाकर सकुशल वापस ले आता।

एक दिन कनिष्क और कुंदन दोनों अपने पिता के साथ दिल्ली गए। वहाँ एक रिश्तेदार के घर ठहरे। तय हुआ कि वह भोजन करके फिर दिल्ली घूमने जाएँगे, परन्तु तभी एक गड़बड़ हो गई। कनिष्क कई डिब्बे बिस्कुट खाने के बाद और थोड़ी देर में ही खरबूजा खाने के बाद बाहर सड़क पर टहलने निकल गया। पाँच मिनट पीछे ही दौड़ता हुआ वापस आया। माँ उसे खोज रही थी। कोई आशंका उसके मन में घर कर चुकी थी, आखिर यह बाहर गया क्यों? जरुर कोई शैतानी की होगी।

उसकी आशंका सही निकली। दो मिनट बाद ही घर का माली लाल-पीली आँखें करके द्वार पर आ खड़ा हुआ। कनिष्क जाली के दरवाजे के पीछे छिप गया। माँ ने पूछा-''तुम कौन हो और इस समय क्यों आए हो?''

''आपके यहाँ यह लड़का कौन है? क्या पागल है?'' माली ने उत्तेजना से भर कर कहा।

माँ ने कहा-''हाँ, थोड़ा पागल है।''

उसने कहा- ''मैं माली हूँ यहाँ का। अपने बाल -बच्चों के साथ पास के मकान में रहता हूँ। यह काला चश्मा लगाने वाला लड़का बड़ा ही दुष्ट है। हम इसको जान से मार डालेंगे।''

माँ ने फिर कहा- ''भैया! यह सचमुच पागल है। इसने जो कुछ किया है वह पागलपन में ही किया है।'' फिर उसने कनिष्क से पूछा-''क्या किया

तूने?''

कनिष्क ने कहा– ''मैंने कुछ नहीं किया है। इन्होंने ही मुझे मारा है।''

तब माली ने सब कुछ बताया–''इससे हमारे तीन साल के बेटे को उठाकर जमीन पर दे मारा। वह मर जाता तो? उसका सिर फूट गया है।''

थोड़ी देर के बाद माली की माँ, उसकी पत्नी, बहन, तीन बच्चे और पड़ोस में काम करने वाला माली सभी कनिष्क की शिकायत करने के लिए आ गए। एक भीड़ जमा हो गई। माँ तो शर्म के मारे मर सी गई–''हाय! इसे मैं यहाँ लाई ही क्यों? यह तो कहीं जाने लायक नहीं है।''

उसी समय कुंदन अन्दर से आकर एकदम भीड़ के सामने खड़ा हो गया। उसने कहा–''मेरे भाई ने इस बच्चे का सिर फोड़ दिया है, जैसा तुम कहते हो। वैसे तो केवल थोड़ा सा गूमड़ा उछल आया है, उसको हाथ से दबा देते तो ठीक हो जाता। अब इस पर हल्दी चूना गरम करके पुल्टिस बाँध दो, ठीक हो जाएगा। फिर भी मेरे भाई पर आप सबको बहुत गुस्सा आ रहा है तो मैं आपके सामने खड़ा हूँ मुझे आप इसी तरह पटक दो।''

भीड़ के लोग एक–दूसरे का मुँह देखने लगे। फिर माली बच्चे को डॉक्टर के पास ले कर चला गया। भीड़ छँट गई थी।

इस पूरे घटनाक्रम में कनिष्क को पूरी तरह बदल कर रख दिया। दवाईयों और स्कूल से अधिक असर दिखाया था कुंदन के प्यार ने। सच पूछें तो मनोरोग की यही सबसे बड़ी चिकित्सा है।

बच्चों हमारे आसपास भी कई कनिष्क रहते हैं। हमारा उनके प्रति व्यवहार कैसा है आकलन करिए।

मानसिक विकलांगों की हमें असामान्य लगने वाली हरकतें उनकी बीमारी के कारण ही होती हैं। उनकी आवश्यकता एवं क्रिया प्रतिक्रियाओं को आत्मीयता और स्नेह से समझना चाहिए। क्रोध, उपहास या उपेक्षा तो हम सामान्य लोगों को भी चिढ़ा देते हैं। यही तो समझना चाहता था कुंदन।

● नोएडा (उ.प्र.)

आ जाते सूरज भैया

कहानी : बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

रोज सबेरे दुल्हा बनकर
आ जाते सूरज भैया
बैठ उजाले के रथ पर तब
मुस्काते सूरज भैया

धूप की आतिशबाजी सबको
दिखलाते सूरज भैया
कभी गरम तो कभी नरम हैं
बन जाते सूरज भैया

● गोरखपुर (उ.प्र.)

जीत का महोत्सव

कहानी : विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

किरण दीपावली की छुट्टियों में छात्रावास से घर लौटी अब घर का हाल बेहाल था। सब तरफ सामान बिखरा था। घर में सफाई तथा रंग रोगन का महाअभियान चल रहा था। एक बार तो उसे यह भी समझ नहीं आया कि वह अपना समान कहाँ रखे? दीपावली पर घर की सफाई वाली बात किरण के लिए नई नहीं थी। किरण कई वर्षों से शहर में रह कर पढ़ रही थी। पढ़ाई की हानि नहीं हो इस कारण किरण दिवाली के दिन ही घर पहुँचती थी। उसे घर सजा–धजा मिलता। खाने को कई पकवान भी बने होते थे। इस बार वह दीपावली से कुछ दिन पूर्व घर पहुँच गई थी।

''आ गई किरण?'' दादी ने कहा और अपने काम में जुट गई। दादी का ऐसा रूखा व्यवहार देखकर किरण का मन कुछ उखड़ गया। वह एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गई।

तभी दादा जी आ गए। उनके हाथ में समान के थैले थे। उन्होंने किरण को देखा तो खुश होकर बोले– ''किरण तो यहाँ बैठी है, मैं इसे बस पर देख कर आया हूँ। लगता है यह पहले वाले स्टैण्ड पर उतर कर जल्दी से घर आ गई।''

दादा जी की बात सुन किरण उठ कर उनके पास गई। पैर छूकर आशीर्वाद लिया। तभी दादी किरण के लिए चाय पराठा ले आई। किरण को चाय के साथ दादी के हाथ का मसाला पराठा बहुत पसंद था। दादाजी की बातों ने किरण का मनःस्थिति को ठीक कर दिया था। पराठे की खुशबू ने किरण को पुलकित कर दिया था।

''वा...ह...मजा आ गया'' कहते हुए किरण ने एक हाथ में पराठे की पुंगी (रोल) तथा दूसरे हाथ में चाय का मग पकड़ लिया। किरण इधर–उधर घूमती हुई नाश्ता करने लगी।

''चलो मेरा भार हल्का हुआ। मेरा कुछ काम किरण संभाल लेगी।'' किरण की दादी ने कहा।

''तुम्हारा नहीं, भार तो मेरा कम हुआ। किरण मेरा काम कर दिया करेगी। बार बार बाजार जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। किरण मैंने तेरी दादी को कितनी बार समझाया कि एक बार में सारे समान बता दिया करो। मगर इसकी समझ में यह बात आती ही नहीं।'' किरण के दादा ने कहा।

''क्यों चिन्ता करते हैं? मैं आप दोनों का ही काम कर दूंगी। इस बार में परीक्षा देकर आई हूँ। फिलहाल मुझे कोई पढ़ाई नहीं करनी है। आप बताओ मुझे क्या काम करना है?'' किरण बोली।

नाश्ता समाप्त कर किरण घर के काम में जुट गई। दिन भर दादा–दादी के साथ मिलकर काम करवाती। शाम को माँ–पिताजी के कार्यालय से लौट आने पर उनके साथ भी घर बाजार आदि के काम में मदद करती रही।

एक दिन किरण पुताई के लिए एक कमरा खाली कर रही थी। किरण ने देखा कि कमरे की एक दीवार कुछ गीली सी है। किरण ने अनुमान लगाया कि कहीं से पानी रिस कर दीवार को भिगो रहा हैं। किरण ने पानी रिसने के स्थान का पता लगाने का प्रयास किया। किरण ने देखा कि छत की टंकी तक जाने वाली पाइप लाइन जंग लगने के करण से लीक करने लगी थी। किरण ने दादा जी को यह बात बताई। पिताजी को फोन कर नल ठीक करने वाले को बुलवा लिया। पिताजी की बताई दुकान से आवश्यक समान भी ले आई थी। कुछ समय में पाइप लाइन ठीक हो गई।

सब लोग पूरी ताकत से काम में लगे थे। दीवाली के पहले सभी काम पूरे जो करने थे। धन तेरस को शेष रही

खरीदारी भी कर ली गई। रूप चौदस पर सभी ने ठीक से नहा धोकर नए कपड़े पहने तथा दीपावली के पकवान बनाने शुरु कर दिए। किरण सभी कार्यों में सहयोग कर रही थी। किरण के मन में एक विचार घुमड़ रहा था कि कहीं वह भी अंधविश्वास के जाल में तो नहीं उलझती जा रही? लक्ष्मी पूजा करने के बाद तो उसके मन की बात होंठों पर आ गई थी।

''क्या लक्ष्मी पूजने से धन आता है पिताजी?'' उसने पिताजी से प्रश्न किया। किरण को अपने पिताजी के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर पूरा विश्वास था।

''क्या दीपावली पर हमने केवल लक्ष्मी ही पूजी है?'' पिताजी ने किरण से प्रति प्रश्न किया।

''नहीं बहुत सारे काम किए है। घर की पूरी सफाई की। टूट-फूट की मरम्मत कराई। घर का सभी समान सलीके से जमाया।'' किरण ने कहा। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जिन्दगी को सही रूप से जीने के लिए जरूरी है कि जीवन में उत्साह बना रहे। जीने की इच्छा बनी रहे। दीवाली यही कार्य करती है। बिना किसी आदेश या दबाव के सभी लोग दीवाली के पूर्व काम पूरा करने में जुट जाते हैं। इससे घर, व्यवसाय आदि व्यवस्थित हो जाते हैं। इसका लाभ तो मिलता ही है।'' किरण के पिताजी ने कहा।

''यह बात तो है।'' किरण बोली।

''भारत कृषि प्रधान देश रहा है। दीपावली पर किसान फसल काट कर घर लाते हैं। फसल रूपी लक्ष्मी को घर लाने के लिए किसानों को खेतों में निरन्तर जंग लड़नी होती है। जीत का जश्न मनाना जरूरी है कि नहीं?'' पास बैठे किरण के दादा जी ने कहा।

''ऐसी जीत जिसका लाभ पूरे समाज को मिलता है। जय हो दीपावली की, इस बात पर मुँह मीठा हो जाए'' किरण बोली तथा सामने रखी थाली से बेसन की चक्की का एक टुकड़ा उठा कर मुँह में रख लिया।

• पाली (राज.)

दीपक खोजो

• राजेश गुजर

नीचे बनी रंग-बिरंगी रंगोली में दीपक भी छुपे हैं, आप अपने दिमाग पर थोड़ा जोर देकर बताओ कुल कितने दीपक हैं?

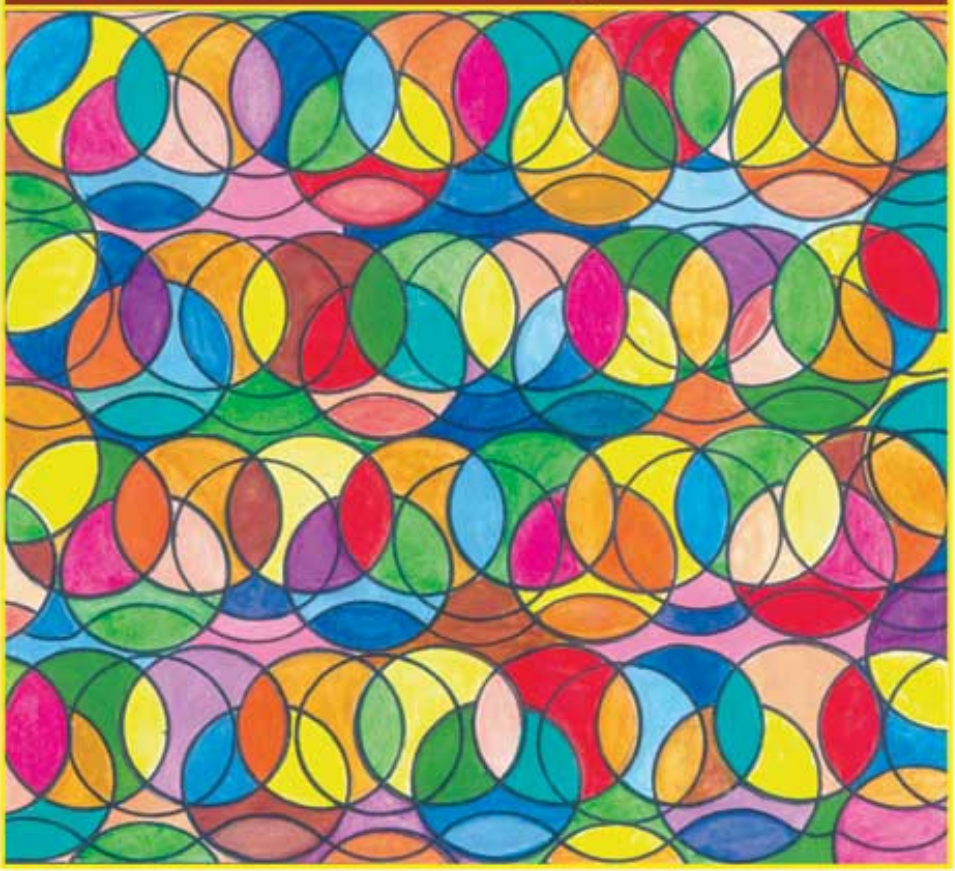

दस दिए गायब

कहानी : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

लक्ष्मी पूजन हो चुका था। बच्चे प्रसाद पाकर बाहर बरामदे में फुलझड़ियाँ लेकर चलाने लगे थे। नीता दीपक थाली में सजाकर कमरों में रखने के लिए निकली थीं।

चालीस दीपक कुंजा के बापू लाए थे, फिर इतने कम क्यों लग रहे हैं। दस दिए तो कुलदेवी के लिए रसोई घर में रख दिए हैं और दस बच्चे आँगन में रखने ले गए हैं, तो बीस बाकी बचना थे। परन्तु ये तो दस ही हैं। बाकी दस कहाँ गए।'' वह हिसाब लगाने लगीं थीं। वैसे तो वह हर साल तीस दीये ही मंगाती है। बिजली की सीरिज के कारण कब दीयों की मांग कम हो गई पता ही नहीं पड़ा। इस बार कुंजा की जिद के कारण चालीस लाना पड़े थे।

वह हिसाब लगाती हुई बाहर आई तो सोमू और रोमू मोहल्ले के बच्चों के साथ फुलझड़ियाँ चला रहे थे।'' कुंज कहाँ गई ''उन्होंने सोच और बरामदे की दीवार पर दिए रखने लगी। ''कुंज कहाँ है रोमु?'' नीता से रहा नहीं गया। तीनों बच्चे एक साथ खेलते हैं तो उसे अच्छा लगता है।

''अम्मा वह तो थाली में दिए लेकर पीपल वाले मैदान तरफ गई है।''

''अकेली ! इतनी रात में क्यों?''

''क्या पता अम्मा?''

घर में तूफान सा मच गया। दिए लेकर पीपल वाले मैदान में कहाँ गई। नीता कुंज के बापू को लेकर मैदान तरफ भागी।

बंजारो के आठ दस तम्बू वहां लगे थे और कुंजा उन बंजारों के बच्चों के साथ फुलझड़ियाँ चला रही थी। एक-एक दिया हर तम्बू के सामने जल रहा था।

''यहाँ क्या कर रही हो?''

उसके बापू चिल्लाए। पहले तो कुंजा सहम गई। फिर बोली-''बापू ये हमारे मित्र हैं, रोज विद्यालय से वापस आती हूँ तो रोज हमसे ये मिलते हैं। इन्हें दिए और फुलझड़ियाँ देने आई थी। ये बेचारे गरीब हैं न इन्हें कौन फुलझड़ी देगा?

''अरे पगली तो हमें बताकर आती, हम कहाँ रोकते।''

बंजारो के सब बच्चे वहां आ गए थे। सबके हाथों में फुलझड़ियाँ थीं, जलती हुई। बच्चे बहुत खुश थे। कुंजी के बापू कभी कुंजा को देखते कभी उन बच्चों को और हंस पड़े।

आज उन्हें लगा कि उन्होंने अपने बच्चों का लालन-पालन बिल्कुल ठीक किया है। नीता को भी दस दिए अधिक मंगाने की जिद और उनके गायब होने का रहस्य समझ में आ गया था।

● छिंदवाड़ा (म.प्र.)

चुटकुले

विष्णुप्रसाद चौहान,
ढाबलाखुर्द

जज- तुमने पुलिस वाले की जेब में माचिस की जलती हुई तीली क्यों रखी?
आदमी - उसने ही कहा था, जमानत करवानी है तो पहले जेब गर्म करो।

*****

माँ अपने पुत्र पिंटू को गृहकार्य कराते हुए- कौनसी तरल (लिक्विड) चीज गर्म करने पर कठोर बन जाती है?
पिंटू - बेसन के पकौड़े

*****

चिंटू एक किलो जलेबी खाने के बाद हलवाई से बोला- भैया थोड़ी चीनी देना।
हलवाई - क्यों?
चिंटू- मैं सोच रहा हूं कि खाने के बाद थोड़ा मीठा हो जाए।

शेर और शेरनी पेड़ के नीचे बैठे थे। इतने में अचानक एक हिरण का बच्चा उनके सामने से तेजी से भागता हुआ निकल गया।
शेरनी- ये क्या था?
शेर - फास्ट फूड।

*****

जज- तुम्हारा जुर्म साबित हो चुका है, कल तुम्हें फांसी पर चढाया जाएगा।
मुजरिम- वो तो ठीक है लेकिन उतारा कब जाएगा... दुकान भी तो खोलनी है।

*****

सोनू - बुरा न मानो होली है कहकर मेरे पड़ोसी ने मुझ पर रंग फेंका। कुछ दिन बाद मैंने उस पर बम फेंक दिया था।
मोनू - वह क्यों ?
सोनू- उस दिन दीवाली थी मैंने बुरा ना मानो दीवाली है, कह दिया।

*****

सही उत्तर

दीपक खोजो

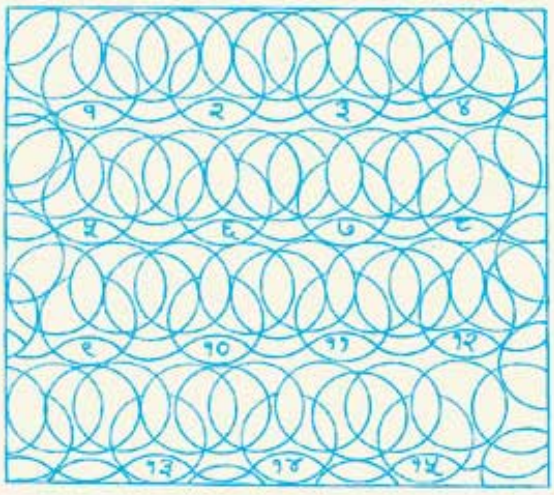

सही उत्तर

अधूरा चित्र पूरा करो

जगमग जगमग दीप जले,
आई दीवाली।
घर घर में नाच रही है खुशहाली।।

दूर हुए अंधियारे, लगें उजले पहर
जगमगा उठे हैं हर गांव हर शहर
धरती आसमान पर छाई,
खुशियों की लाली।

दीप धरे बालक बाला मुंडेरों पर
रंग रंगोली से सजाए हैं कैसे घर
बंदनवार लगाए द्वार सजाए,
लगाए झूमर मोली।

चूबू मुबू फोड़ रहे हैं पटाखे
रामू श्यामू भी कर रहे हैं धमाके,
खुशियों से भर ली, पटाखों की झोली।

भेदभाव भुलाकर, गले मिलरहे हैं
गीत खुशी के गाए, कैसे झूम रहे हैं
मन में स्नेह भाव, बोले मीठी बोली।

● बड़वाह (म.प्र.)

आई दीवाली

कविता : अखिलेश जोशी

।। पुराण कथा।।

यम दीपक

कहानी : चित्रेश

देश के अधिकांश भागों में 'यम' के नाम पर दीपदान की परम्परा है। दीपावली के दो दिन पूर्व धन्वतरि–त्रयोदशी के सायंकाल मिट्टी का एक कोरा दीपक लेते हैं। उसमें तिल का तेल डालकर नवीन रूई की बत्ती रखते हैं और फिर उसे प्रकाशित कर, दक्षिण की तरफ मुँह करके मृत्यु के देवता यम को समर्पित करते हैं। तत्पश्चात् इसे दरवाजे के बगल अनाज की ढेरी पर रख देते हैं। प्रयास यह रहता है कि यह रात भर जलता रहे, बुझे नहीं। क्यों प्रकाशित करते हैं यह दीपक? क्या है इसका रहस्य? इस सम्बन्ध में एक रोचक और सुन्दर पुराणकथा मिलती है।

कहते हैं, बहुत पहले हंसराज नामक एक प्रतापी राजा था। एक बार वह अपने मित्रों, सैनिकों और अंगरक्षकों के साथ जंगल में शिकार खेलते गया। संयोग से राज सबसे बिछुड़कर अकेला रह गया और भटकते हुए एक अन्य राजा हेमराज के राज्य में पहुँच गया।

हेमराज ने थके–हारे हंसराज का भव्य स्वागत किया। उसी रात हेमराज के यहाँ पुत्र जन्म हुआ। इस खुशी के अवसर पर हेमराज ने राजकीय उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आग्रह के साथ हंसराज को कुछ दिनों के लिए अपने यहाँ रोक लिया। बच्चे के छटवीं के दिन एक विचित्र घटना घटी। पूजा के समय देवी प्रकट हुई और बोली–''आज इस शिशु की जो इतनी खुशियाँ मनाई जा रही हैं, यह अपने विवाह के चौथे दिन मृत्यु को प्राप्त जाएगा।''

इस भविष्यवाणी से सारे राज्य में शोक छा गया। हेमराज और उसके परिजनों पर तो वज्रपात ही हो गया। सबके सब स्तब्ध रह गए। इस शोक के समय हंसराज ने राजा हेमराज और उसके परिवार को ढाढ़स दिया–''मित्र, आप तनिक भी विचलित न हों। इस बालक की रक्षा मैं करूँगा। संसार की कोई भी शक्ति इसका बाल भी बाँका नहीं कर सकेगी।''

हंसराज ने यमुना के किनारे एक भूमिगत किला बनवाया और उसी के अन्दर राजकुमार के पालन–पोषण की व्यवस्था कराई। इसके अतिरिक्त राजकुमार की प्राणरक्षा के लिए हंसराज ने सुयोग्य ब्राह्मणों से अनेक तांत्रिक अनुष्ठान, यज्ञ, मंत्रजाप आदि की भी व्यवस्था करा रखी थी। धीरे–धीरे राजकुमार युवा हुआ। उसकी सुन्दरता एवं तेजस्विता की चर्चा सर्वत्र

फैल गई। राजा हंसराज के कहने से हेमराज ने राजकुमार का विवाह भी कर दिया। जिस राजकुमारी से युवराज का विवाह हुआ था, वह साक्षात लक्ष्मी लगती थी। ऐसी सुन्दर वर–वधू की जोड़ी जीवन में किसी ने न देखी थी।

विधि का विधान....विवाह के ठीक चौथे दिन यम के दूत राजकुमार के प्राण हरण करने आ पहुँचे। अभी राज्य में मांगलिक समारोह चल रहा था। राजपरिवार और प्रजा जन खुशियाँ मनाने में मग्न थे। राजकुमार और राजकुमारी की छवि देखकर यमदूत भी विचलित हो उठे, किन्तु राजकुमार के प्राणहरण का अप्रिय कार्य उन्हें करना ही पड़ा। यमदूत जिस समय राजकुमार के प्राण लेकर चले, उस समय ऐसा हाहाकार मचा और दारुण दृश्य उपस्थित हुआ, जिससे द्रवित होकर दूत स्वयं भी रोने लगे।

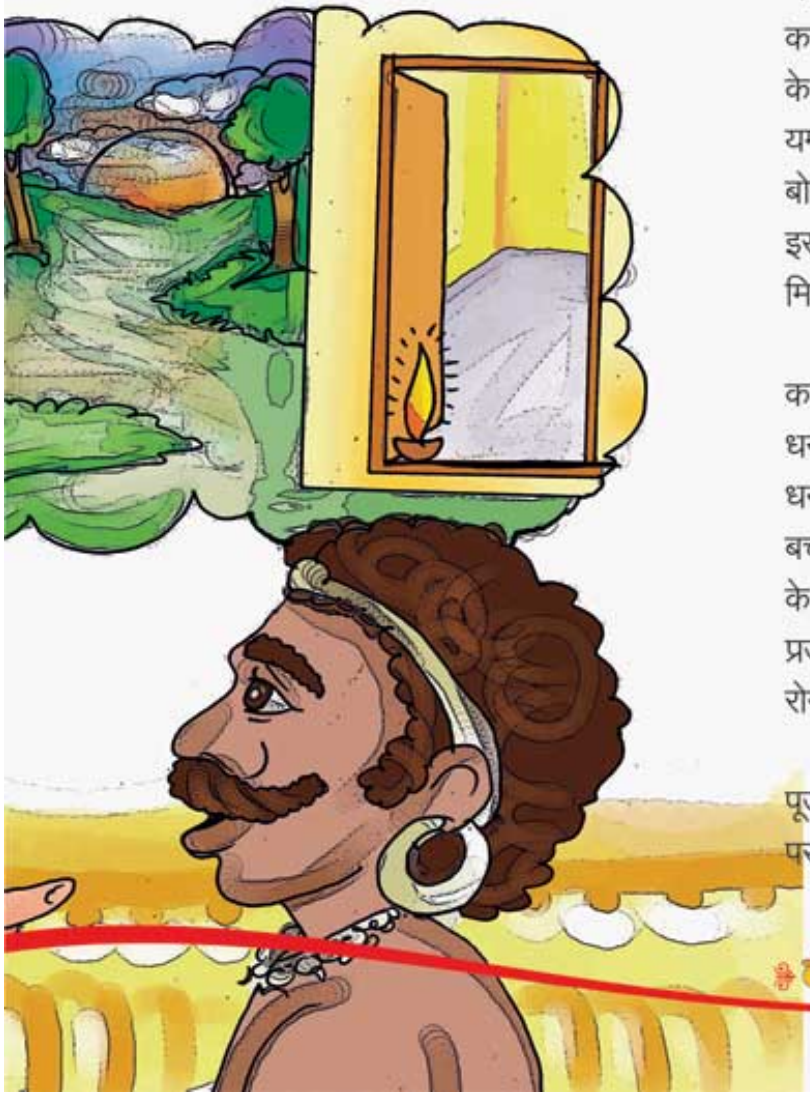

इस घटना के कुछ समय पश्चात् एक दिन यमराज ने प्रसन्न मुद्रा में अपने दूतो से पूछा–''दूतो! तुम सब अनन्त काल से पृथ्वी के जीवों का प्राणहरण करते आ रहे हो, क्या तुम्हें कभी किसी जीव पर दया आई है और मन में यह विचार उठा है कि इसे छोड़ देना चाहिए?''

यम के दूत एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यमराज ने उनके संकोच को भाँपकर उन्हें उत्साहित किया–''झिझको मत, अगर ऐसा प्रसंग आया हो तो निर्भय होकर बताओ।''

इस पर एक दूत ने सिर झुकाकर निवेदन किया–''मृत्यु देव, ऐसे प्रसंग तो कम ही आए हैं। किन्तु एक घटना अवश्य हुई है जिसकी स्मृति मुझे आज भी विह्वल कर देती है।'' यह कहते हुए दूत ने राजा हेमराज के पुत्र के प्राणहरण की घटना सुना दी। इस दुःखद प्रसंग से यमराज भी विचलित हो उठे। इसे लक्ष्य करके दूत बोला– ''नाथ! क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है, जिससे इस प्रकार की अकाल मृत्यु से प्राणियों को छुटकारा मिल जाए?''

इस पर यमराज ने कहा–''जीवन और मृत्यु सृष्टि का अटल नियम है। इसे बदला नहीं जा सकता। किन्तु धनतेरस को पूरे दिन का व्रत और यमुना में स्नान कर धन्वतरि और यम का पूजन–दर्शन, अकाल मृत्यु से बचाव कर सकता है। यदि यह सम्भव न हो तो भी संध्या के समय घर के प्रवेश द्वार पर यम के नाम एक दीपक प्रज्वलित करना चाहिए इससे असामयिक मृत्यु और रोग से मुक्त जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

इसके पश्चात् से ही धनतेरस के दिन धन्वतरि के पूजन और प्रवेश द्वार पर यम दीपक प्रज्वलित करने की परम्परा है।

● सुलतानपुर (उ.प्र.)

कविता के

दीवाली आई रे

• **सोनम बन्देवार**

दीवाली आई रे
खुशी खूब लाई रे
बंट रही मिठाई रे
गाओ बहन भाई रे

• **ठिमराठाना (म.प्र.)**

दीवाली

• **अंकिता माहोरे**

आई दीवाली, आई दीवाली
खुशियों को संग लाई दीवाली
बच्चे आए बड़े भी आए
सबने सुंदर दीप जलाए
दीपों से जगमग संसार,
एक दूजे से बढ़ता प्यार

• **सारस (म.प्र.)**

दीप- पंक्तियां

• **निधि यादव**

दीपो की सुन्दर पंक्ति में
लगी एक पंक्ति बच्चों की
सुन्दर–सुन्दर दीप जले थे
बच्चे भी लग रहे खिले थे
पूरे घर पर सजी थी माला
खुशियों का भर गया उजाला
जगमग–जगमग जग था सारा
दीवाली त्योहार है प्यारा।

• **छिंदवाड़ा (म.प्र.)**

नंदादीप

दीपों का त्योहार

• **मयंक सराठे**

खुशियों की बौछार दीवाली
जीवन में उपहार दीवाली
तनमन घर सब स्वच्छ उजेरे
दीपों का त्योहार दीवाली

• **छिन्दवाड़ा (म.प्र.)**

रंगोली

• **पूजा मोहने**

रंग बिरंगे रंगों से सजी हैं रंगोली
हर रंग एक मुस्कान है लगती बड़ी सजीली
आंगन भर जाएं रंगों से, ज्यों लगता प्यारा है
बचपन में खुशियां का वैसे रंगों भरा उजारा है

• **छिन्दवाड़ा (म.प्र.)**

त्योहार मिलन का

• **पूनम मोहने**

दीवाली त्योहार दीप का
मिलकर दीप जलाएंगे
सजा रंगोली से आंगन को
सबका मन हर्षाएंगे
बम पटाखे भी फोडेंगे
खूब मिठाई खाएंगे
दीवाली त्योहार मिलन का
घर–घर मिलने जाएंगे।

• **छिन्दवाड़ा (म.प्र.)**

।। भैया दूज पर विशेष ।।

बहनें रोली लेकर आईं

कविता : डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

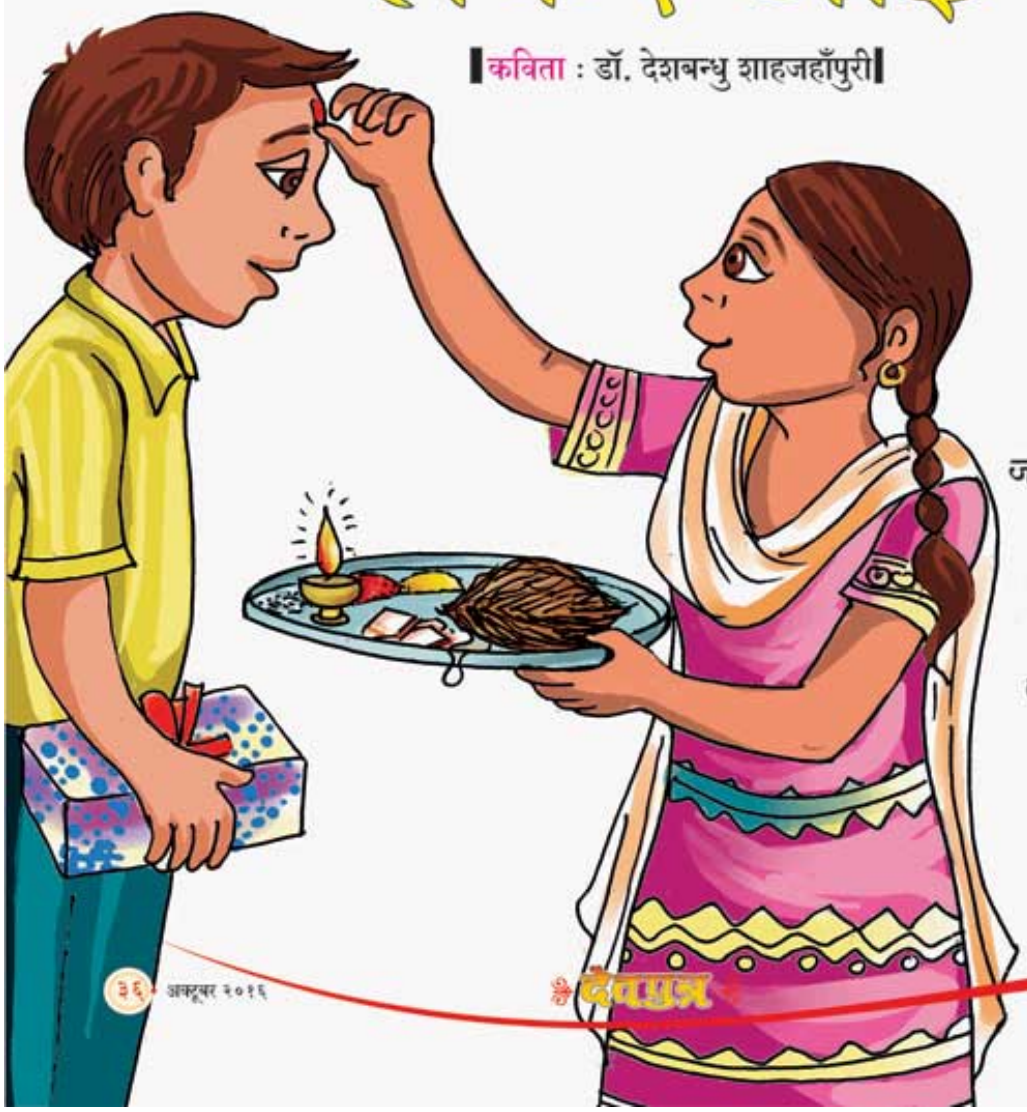

बिखरी घर आंगन में खुशियां,
बहनें रोली लेकर आईं।

सजी हुई थाली हाथों में,
अधरों पर मुस्कानें।
मस्तक चंदन तिलक लगाकर,
गाएं प्रेम तरानें।
भाई बहन का प्यार अमर है,
सारा जग ये जाने–
देने शत शत बार दुआएं,
बहनें रोली लेकर आईं।

जाति धर्म के दूर पर्व यह,
बस अपनापन झलके।
हर हृदयन्तर की गगरी से,
ममता का रस छलके।
प्रीत डोर से बंधते ऐसे,
बंधन अद्भुत बल के–
लेकर नैनों में आशाएं,
बहनें रोली लेकर आईं।

जीवन की हर कठिन डगर पर,
साथ कहीं ना छूटे।
जग सागर में नाव भाई की,
नहीं कभी भी टूटे।
पतझड़ ना हो मन उपवन में,
नित सुख–अंकुर फूटे–
हरदम दूर रहें विपदाएं,
बहनें रोली लेकर आईं।

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

बताओ तो जानें

● राजेश गुजर

दहशरे मैदान में तीन बालक अपने धनुषबाण से रावण, कुंभकर्ण एवं मेघनाद के पुतले का वध कर रहे हैं, बताइए किसने किस का वध किया।

आपकी पाती

डॉ. प्रभा पंत

सदैव की तरह देवपुत्र का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती हूँ कि मैं देवपुत्र की सदस्य बनकर एक ऐसी संस्था से संबद्ध हुई हूँ जो मेरे विश्वास के फलीभूत होने का प्रमाण दे रही है। मेरा विश्वास है हम जैसे राष्ट्र की कल्पना करते हैं, बच्चों को वैसा साहित्य परोसें, क्योंकि साहित्य से सोच उत्पन्न होता है और सोच से समाज। देवपुत्र के प्रत्येक पाठक से सविनय आग्रह है आप अपने परिचित बच्चों के जन्मदिन के सुअवसर पर उपहार स्वरूप देवपुत्र की अथवा व्यक्तित्व विकसित करने वाली किसी भी पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता दें, उसके पश्चात उनके माता–पिता स्वतः चाहेंगे कि उनके बच्चे बाल पत्रिका पढते रहें। राष्ट्र के भविष्य निर्माण में सहयोग देने वाले देवपुत्र परिवार को साधुवाद।

● हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

डॉ. राजेन्द्र पंजियार

देवपुत्र का मई २०१६ अंक मिला। सदस्य हूं इस नाते भी अंक नियमित मिलते रहे हैं। देवपुत्र की व्यापक लोकप्रियता आश्चर्य में डालती रही है। बाल पत्रिकाओं के बीच इस शीर्ष पर होने का कारण मेरी समझ से यह है कि विविध सामग्रियों से सुसज्जित यह पत्रिका निस्संदेह सर्वाधिक बालोपयोगी है। इस प्रसंग में किसी अन्य पत्रिका या पत्रिकाओं का नामोल्लेख उचित नहीं समझता।

अपनी बात शीर्षक से उक्त अंक में समुद्र मंथन की पौराणिक कथा की प्रतीकात्मकता को जिस विदग्धता से उजागर किया गया है, वह सम्पादकीय कौशल को अत्यंत प्रभावोत्पादक बनाता है। साधुवाद स्वीकारें।

● भागलपुर (बिहार)

अधिकार

कहानी : अंतिम भावसार

उस दिन सुबह–सुबह बड़ी हलचल थी सड़क किनारे किसी समारोह जैसी तैयारी थी। लोग आ जा रहे थे। माईक लाउडस्पीकर पर बार–बार हेलो चेक, हेलो चेक की आवाजें आ रही थीं। धवल वस्त्रों में कुछ लोग जो कार्यकर्त्ता से जान पड़ते थे अन्य सहयोगियों को निर्देश दे रहे थे तथा जल्दी से तैयारियाँ पूर्ण करने का कह रहे थे। मंच पर सजावट थी। कुर्सियां लगाई जा रही थी। एक कार्यकर्त्ता सा दिखने वाला व्यक्ति आया जिसके पास कई तख्तियाँ थीं जिन पर नारे लिखे थे, ''हमारा अधिकार हम लेकर रहेंगे,'' हमें हमारा अधिकार लेना आता है, ''अधिकार माँगते हैं कोई भीख नहीं, ''प्रेम से अधिकार दो वर्ना छीन लेंगे'' और भी कई सारे नारे। शायद अपने अधिकारों की बड़ी लड़ाई के लिए आन्दोलन की तैयारियाँ थीं।

वहीं मंच के कुछ दूरी पर ही गायों का बाड़ा था, करीब छः सात गायें बंधी थीं। सुबह का समय गायों के रंभाने की आवाजें आ रही थीं। बछड़े एक तरफ बंधे हुए थे। वे भी रंभा रहे थे, अन्दर जाने पर देखा गायें अपने बंधे हुए बछड़ों को बड़े ही स्नेह से निहार रहीं हैं, और बछड़े भी दूर बंधे–बंधे माँ–माँ की आवाजे कर रंभा रहे हैं।, ग्वाले को आते देखकर गायों में कुछ हलचल बढ़ी–बैचेनी बढी, आखिर क्यों ना हो उनका मालिक आया था। उसके हाथ में चमचमाती बाल्टी थी साथ में एक थैला भी था। ग्वाले ने थैले से थोड़ा अनाज एवं खल निकालकर एक तगारी (गायों को खाना परोसने हेतु पात्र) में डाली फिर एक बछड़े को जो कोने में बंधा हुआ था उसको खोला। वहा माँ माँ रंभा रहा था, बछड़े की रस्सी खोलते ही वह दौड़कर गाय के पास पहुँचा।

गाय भी बछड़े को पास पाकर स्नेह से उसकी पीठ पर जीभ फिराने लगी, स्नेह और ममता का ज्वार हिलोरें ले रहा था। बछड़े ने माँ का दूध पीना शुरू किया वह बारी बारी माँ के स्तनों को चाटता फिर दूध पीता...।

अरे यह क्या! ग्वाले ने एकदम से बछड़े की रस्सी को खींचा और उसे फिर से उसी कोने में बाँध दिया। ग्वाले ने अपनी चमचमाती बाल्टी को नीचे रखा और गाय का दूध दुहने लगा। धीरे–धीरे लगभग पूरी बाल्टी दूध से भर गई। ग्वाले के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी। यही क्रम उसने बाकी बछड़ों एवं बाकी अन्य गायों के साथ भी दोहराया। फिर, जाने से पहले ग्वाले ने सभी बछड़ों की रस्सियों को पुनः खोल दिया। वे रंभाते हुए गायों की ओर दौड़े, गायें भी बछड़ों को अपनी जीभ से सहलाने लगी। बछड़े और गायें दोनों ही बेचैन थे, शायद ग्वाले द्वारा दूध दुह लेने के कारण बच्चे भूखे थे। दूध पर पहला अधिकार बछड़ों का था वे ही उस दूध के प्रथम एवं प्राकृतिक उत्तराधिकारी थे। पर वे जानवर थे गूंगे निरीह, लाचार। ग्वाला उनका मालिक था। आखिर उसने दूध के लिए ही

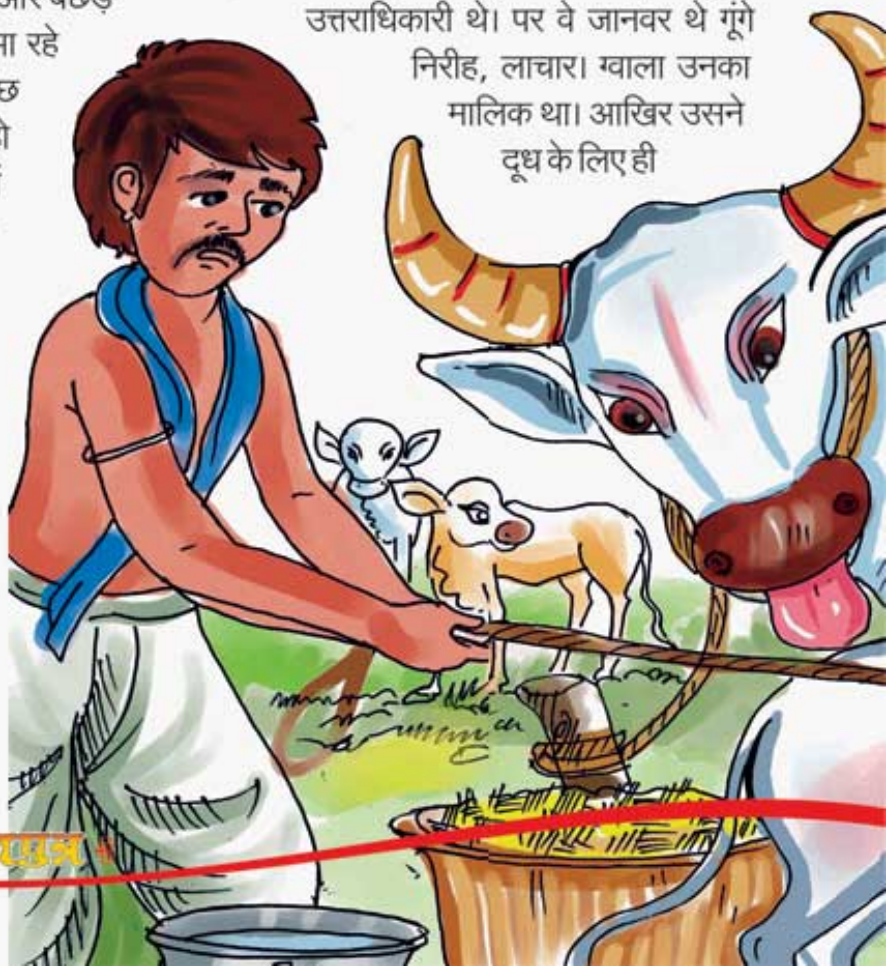

समकालीन बाल साहित्य

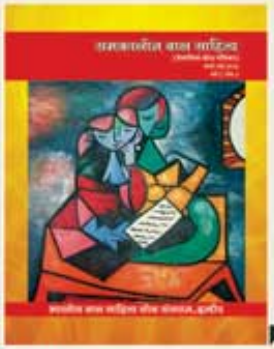

सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा शोध पत्रिका समकालीन बाल साहित्य का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है।

पत्रिका में आलेखों का प्रकाशन नहीं किया जाता केवल शोध आलेखों का (संदर्भ सहित) प्रकाशन किया जाता है।

शोध विद्यार्थी इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क जमा कर अपने एक शोध आलेख का प्रकाशन निःशुल्क करा सकते हैं। शोध आलेख कृति देव १० फोण्ट में वर्ल्ड फाईल के रूप में ई-मेल द्वारा भेजें जा सकते हैं।

शुल्क

वार्षिक सदस्ता ४००/-

एक अंक १२५/-

(समस्त बैंक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर देवपुत्र, इन्दौर के नाम से देय होगा।)

पत्र व्यवहार

निदेशक, भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान

४०, संवाद नगर, इन्दौर, ४५२००१ (म.प्र.) दूरभाषः ०७३१-२४००४३९

ई-मेल - samkalinbalsahitya@gmail.com

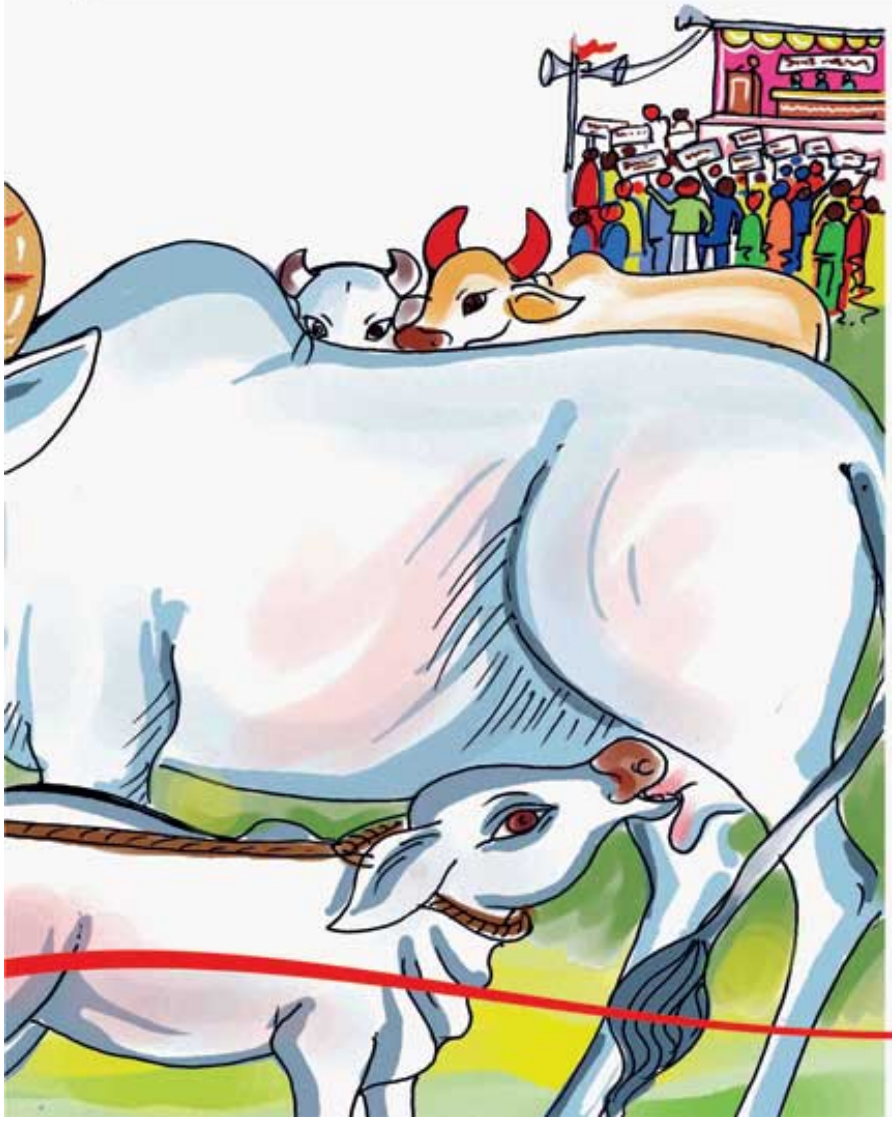

गायों को पाला था।

तभी लाउडस्पीकर से जोर–जोर से आवाजें होने लगी सबको मंच के पास शीघ्र आने का आह्वान किया जा रहा था। नेताजी आ गए थे। चारों तरफ भीड़ सबकी आँखों में क्रोध और जंग का उन्माद। हाथों में अपने अधिकारी के लिए लड़ने और अधिकार छीनकर लेने के नारे लिखी तख्तियाँ। भाषण शुरु हुआ–''हम जानवर नहीं, लाचार नहीं, बेजुबान नहीं हैं हम अपना अधिकार लेना जानते हैं। हम अधिकार छीन लेंगे।''

सोचता रहा...अपना अधिकार पाने के लिए जुबान का होना जरूरी है? क्या बेजुबान अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ सकता? अधिकार आखिर किसका, ग्वाले का या बछड़े का।

● उज्जैन (म.प्र.)

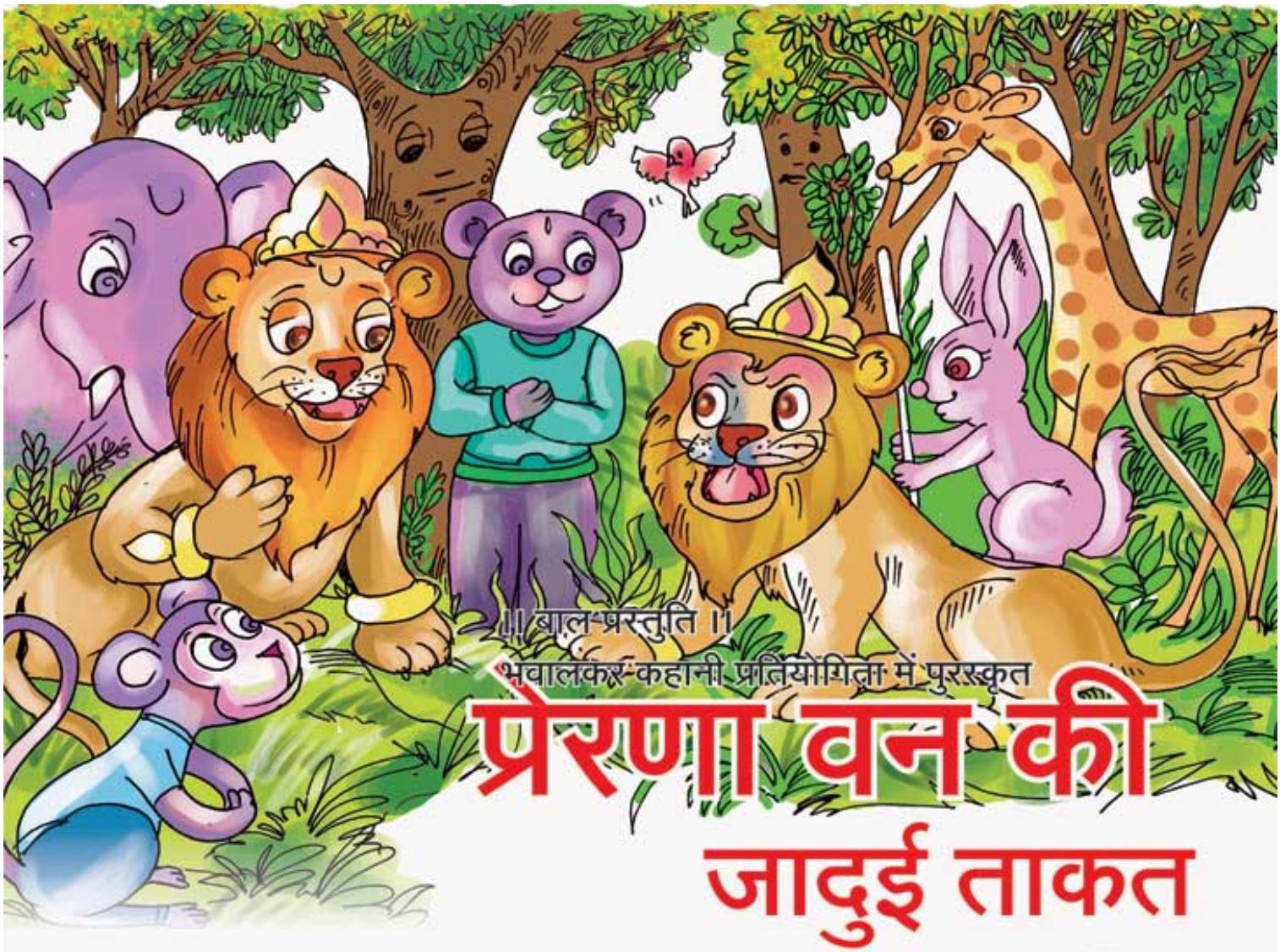

।। बाल प्रस्तुति ।।

भवालकर-कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत

प्रेरणा वन की जादुई ताकत

कहानी : विजय वैष्णव

एक बार की बात है। एक अति विशाल वन था। उस वन का नाम प्रेरणा वन था। यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यहाँ कोई जानवर, पक्षी, मनुष्य कोई भी जीव आता तो वह यहाँ से कुछ शिक्षा लेकर ही जाता था। प्रेरणा वन के रहने वाले सभी जानवर भ्रष्ट बुद्धि वाले जीव को भी सही मार्ग बता देते थे। ऐसा लगता कि इस वन के पास कोई जादुई ताकत हो।

प्रेरणा वन में बहुत सारे जानवर, पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि जीव रहते थे। यहाँ के सभी जीव आपस में बहुत प्रेम से रहते थे। यहाँ के सभी जीवों में कोई बैर नहीं कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं था।

प्रेरणा वन का एक राजा था उसका नाम शेरू था वह कुछ महिनों पूर्व ही प्रेरणा वन का राजा बना। शेरू (शेर) बहुत समझदार था। इस वन में एक वृद्ध शेर का उसका नाम झेरू काका था। वे शेरू के दादाजी थे। शेरु के मंत्री का नाम पप्पू (भालू) था। शेरु के सेनापति का नाम राजू (बंदर) था।

कोई भी समस्या आती तो प्रेरणा वन के सभी जानवर मिल-जुलकर समस्या का समाधान करते थे। प्रेरणा वन का नाम आसपास के सभी वनों में प्रसिद्ध था। पास में ही एक वन ओर था उसका नाम शांति वन था। एक दिन शांति वन के राजा का देहांत हो गया। वहां के मंत्री ने

वन का राजा बनाने हेतु सभा बुलाई। वहां पर एक घमण्डी शेर था उसका नाम खैरू था। खैरू चालाकी से शांति वन का राजा बन गया। शांति वन के सभी जानवर प्रेरणा वन के किस्से खैरू को सुनाने लगे व आपस में प्रेरणा वन और प्रेरणा वन के राजा शेरू की प्रशंसा करते थे। यह खैरू से सहा नहीं गया। खैरू क्रोध में आकर शांति वन में नया नियम लागू कर दिया कि कोई भी जानवर, पशु, पक्षी प्रेरणा वन की बात नहीं करेंगे अन्यथा सजा के तौर पर मृत्यु दण्ड मिलेगा। सभी जानवर भयभीत हो गए। एक दिन शांति वन में कालू बंदर अपने मित्र को प्रेरणा वन के किस्से सुना रहा था तभी अचानक खैरू के सिपाहियों ने देख लिया उसे सभा में लाया गया और उसे चौराहे पर मृत्यु दण्ड दे दिया। अब खैरू से रहा नहीं जा रहा था। खैरू प्रेरणा वन व उसके राजा शेरू से ईर्ष्या करने लगा था।

खैरू ने सोचा कि प्रेरणा वन पर आक्रमण कर प्रेरणा वन को अपने अधीन कर लें। तो ''नहीं रहेगा बांस न बजेगी बाँसुरी।'' परन्तु प्रेरणा वन पर आक्रमण करने के लिए खैरू को सेना की आवश्यकता पड़ेगी। उसने यह प्रस्ताव सभी के समक्ष रखा परन्तु कोई भी जानवर प्रेरणा वन पर आक्रमण करने के लिए तैयार नहीं हुआ। खैरू ने कहा अगर किसी ने मना किया तो उसे भी मृत्यु दण्ड मिलेगा।

सभी जानवर को मजबूरन प्रेरणा वन पर आक्रमण करने के लिए तैयार होना पड़ा।

इस समाचार से अनजान प्रेरणा वन में सभी जानवर आनंद से रह रहे थे। अचानक प्रेरणा वन का सेनापति घबराता हुआ आया व शेरू से कहा कि शांति वन हम पर आक्रमण करने वाले हैं। शेरू ने तुरंत आपातकालीन सभा बुलाई। शेरु के दादाजी झेरू काका के कहने पर व सभी जानवरों की सहमति से शेरु ने एक योजना बनाई। वह योजना यह थी कि शेरू स्वयं अपने मंत्री व सेनापति के सामने खैरू की प्रशंसा करेंगे व खैरू का हृदय परिवर्तन हो जाएगा। शेरू ने खैरू के आते ही खैरू की प्रशंसा शुरु कर दी और शेरू की योजना सफल हो गई। खैरू का हृदय परिवर्तन हो गया। खैरू ने शेरू से व प्रेरणा वन और शांति वन से क्षमा मांगी। शेरू का हृदय बहुत ही अच्छा था। शेरू ने खैरू को माफ कर दिया व शेरू के कहने पर प्रेरणा वन व शांति वन के नागरिकों ने भी खैरु को माफ कर दिया।

अब दोनों अच्छे मित्र थे प्रेरणा वन के सभी जानवर व शांति वन के सभी जानवर प्रसन्न थे।

वास्तव में प्रेरणा वन के पास जो जादुई ताकत थी वह थी एकता, संगठन शक्ति और बुद्धिमत्ता की।

● **चितौड़गढ़ (राज.)**

कविता बनाइए (२०)
की चयनित रचना

पर्वों की रानी दीपाली की करने अगवानी।
सेनापति बन चला दशहरा मार असुर अभिमानी।।
कुंभकर्ण और मेघनाद संग धूं धूं जलता रावण।
बुरे काम का बुरा नतीजा याद दिलाता हर क्षण।।

● अनंत गोस्वामी, अयोध्या (उ.प्र.)

दिमागी कसरत

9 ऋषि

इन्हें किसी भी दिशा में एक सीधी रेखा में दिये गये वर्गों में ढूंढिए।

ल	वा	ल्मी	कि	श	वि	श्ल
मि	की	ता	गौ	म	श्वा	मी
अ	ग्स	त	श	लो	मि	त्र
द	म	गौ	त	ल	त्र	म
धी	र्व	दु	र्वा	सा	न	र्द
चि	भ	धि	र	क	प	क
रा	र	ची	वा	श्य	त	द
ज	द्वा	जा	क	श	ग	र
भ	ज	ल	त्स्य	ग	अ	म

राशियों से जुड़े इन चिह्नों को क्या आप पहचानते हैं ?

1.

2.

3.

अक्षरों और अंकों में संबंध बताइए।

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

बाजार

कविता : डा. उषा यादव

जगर-मगर हो रही नुमाइश
मन को मोहे सौ-सौ बार,
हमें रिझाता है बाजार।
रोज नए सामानों से
पट जाती हैं दूकानें
ऐसा लगता सजी हुई
इत-उत सोने की खानें।
अपने पांसे सभी फेंकने
को हरदम रहता तैयार,
हमें रिझाता है बाजार।
पिज्जा-बर्गर के आगे
फीकी पड़ती रोटी-दाल
गले न कोल्डड्रिंक के आगे
शरबत या लस्सी की दाल।
और चिप्स के पैकेट सम्मुख
पोहा हो जाता बेकार,
हमें रिझाता है बाजार।
दो पैसे हैं अगर जेब में
तो वे भी लगते खलने
और अगर दो लाख धरे हैं
लगते बिन पांवों चलने
जेब हमारी खाली कर दे
मिनटों में, ऐसा होशियार
हमें रिझाता है बाजार।

• आगरा (उ.प्र.)

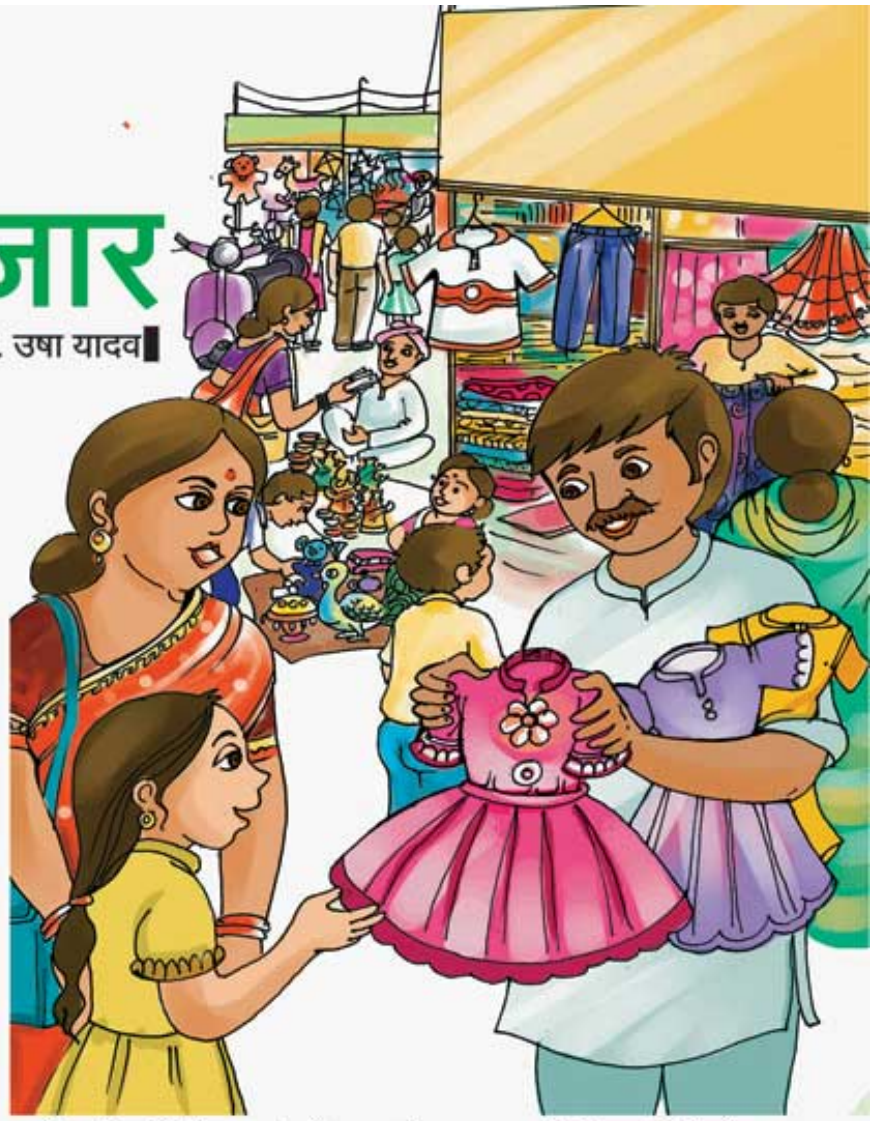

बाजार में अनेक ऐसी वस्तुएं भी आकर्षक बनाकर बेची जाती हैं जो स्वास्थ्य, धन व संस्कारों को हानि पहुँचाती हैं। प्रस्तुत कविता में बाजार की ऐसी बुराई का संकेत है। सं.

सही उत्तर

शब्दक्रीड़ा

शस्त्रपूजा

(१) त्रिशूल - महेश
(२) अंकुश - गणेश
(३) चक्र - विष्णु
(४) तलवार - दुर्गा
(५) वज्र - इन्द्र
(६) गदा - हनुमान
(७) परशु- परशुराम
(८) दण्ड - यमराज
(९) शूल - कार्तिकेय
(१०) धनुषबाण - श्रीराम

बताओ तो जानें

(१) रावण (२) कुंभकर्ण (३) मेघनाद

पहेलियाँ

(१) मेंढक (२) पतंग (३) मिर्च (३) मोमबत्ती

बताओ कौन है?

५,१०,६,४,८,२,३,१,७,९

छोटे से बड़ा

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) चैत्र मास में कौन सा प्रमुख त्योहार आता है?
(अ) होली
(आ) वर्ष प्रतिपदा
(इ) जन्माष्टमी

(२) वैशाख मास में आनेवाला कौन सा प्रमुख पर्व नहीं है?
(अ) अक्षय तृतीया
(आ) बुद्ध जयंती
(इ) मकर संक्रान्ति

(३) पवित्र गंगा नदी से सम्बन्धित पर्व कौनसा है जो ज्येष्ठ मास में आता है?
(अ) गंगा दशहरा
(आ) शनि जयंति
(इ) नारद जयंति

(४) कौनसा पर्व आषाढ़ में नहीं आता?
(अ) बलि पूजा
(आ) जगन्नाथ रथ यात्रा
(इ) गुरु पूर्णिमा

(५) श्रावण का प्रसिद्ध त्योहार कौनसा है?
(अ) भाई दूज
(आ) विजया दशमी
(इ) रक्षाबंधन

(६) भाद्रपद का प्रसिद्ध उत्सव कौनसा है?
(अ) व्यास पूर्णिमा
(आ) जन्माष्टमी
(इ) शस्त्र पूजन

(७) अश्विन मास में नहीं आने वाला त्योहार कौन सा है?
(अ) नवरात्रि
(आ) रामनवमी
(इ) दशहरा

(८) कार्तिक मास का पर्व जो देवी लक्ष्मी से सम्बद्ध है?
(अ) दीपावली
(आ) शरदोत्सव
(इ) नृसिंह जयन्ति

(९) अगहन मास में किस महान ग्रंथ की जयंति मनाई जाती ह?
(अ) रामायण
(आ) महाभारत
(इ) श्रीमद् भगवद् गीता

(१०) पौष मास का प्रमुख पर्व कौनसा है?
(अ) देवशयनी एकादशी
(आ) मकर संक्राति
(इ) दुर्गाअष्टमी

(११) माघ मास में आने वाला पर्व जो सरस्वती जयंती भी है कौनसा है?
(अ) बसंतपंचमी
(आ) ऋषिपंचमी
(इ) नागपंचमी

(१२) फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला प्रमुख त्योहार कौनसा है?
(अ) दशहरा
(आ) होली
(इ) दीवाली

(उत्तर इसी अंक में।)

दीवाली के पटाखे
चित्रकथा - देवांशु वत्स
दीपावली के दिन
मोटू, देखो, राम के पटाखे मैं अपने छोटे पटाखे रखकर उसके बड़े पटाखे ले लेता हूं
वाह !
उसके पास ढेर सारे है। मैं अपने वाले रख कर उसके वाले उठा लेता हूं।
कुछ ही देर में राम आया...
अरे! मेरे पटाखे इतने कम कैसे हो गए? खैर इसे अच्छी तरह सुखा लेता हूं।
रात में...
पहले मैं अपने पटाखे चलाता हूं।
धड़ाम
अब मेरी बारी! अपने कान बंद कर लेना! ही..ही..ही!
फुस्स
अरे यह क्या?
मोटू लगता है, तुम्हारे पटाखे भी पानी में गिर गए थे... तुम्हें उन्हें...
...ठीक से सुखा लेने चाहिए थे।
क्या? पानी वाले पटाखे! हाय!
!
?

|| हमारे राज्य पुष्प ||

सिक्किम का

राज्य पुष्पः

नोबिल आर्किड

डॉ. परशुराम शुक्ल

फूल निराला पर्वत वाला,
भारत में मिल जाता।
चीन, कोरिया और हवाई,
से भी इसका नाता।
पतझड़ वाला छोटा पौधा,
हरी पत्तियों वाला।
बाँस सरीखा सीधा ऊँचा,
इसका तना निराला।
धवल गुलाबी फूलों से यह,
मौसम में भर जाता।
मधुर सुगन्ध बहाकर अपनी,
सुन्दर रूप दिखाता।
बच्चो जैसा इसे सम्हालो,
नखरे बहुत दिखाता।
आठ माह किलकारी भरता,
सर्दी में सो जाता।
चीन देश में इससे अभिनव,
हर्बल चाय बनाते।
और बहुत से रोगों को भी,
इससे दूर भगाते।

• भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

जानो पहचानो

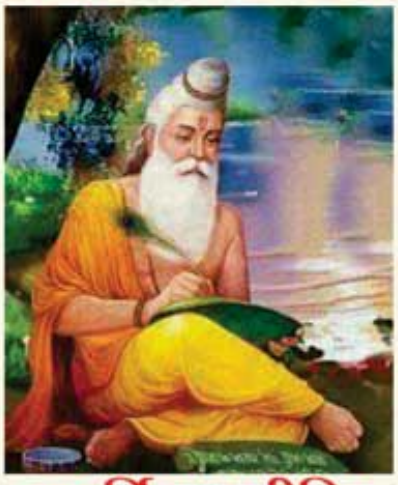

महर्षि वाल्मीकि

सही उत्तर

दिमागी कसरत

९ ऋषि - वाल्मीकि, गौतम, विश्वामित्र, दुर्वासा, भरद्वाज, अगस्त्य, कर्दम, कश्यप, लोमश

अक्षरों व अंकों में संबंध बताइए

क-१, ख-३, ग-१

अक्षरों व अंकों में संबंध बताइए

१-वृश्चिक २-कन्या ३-सिंह

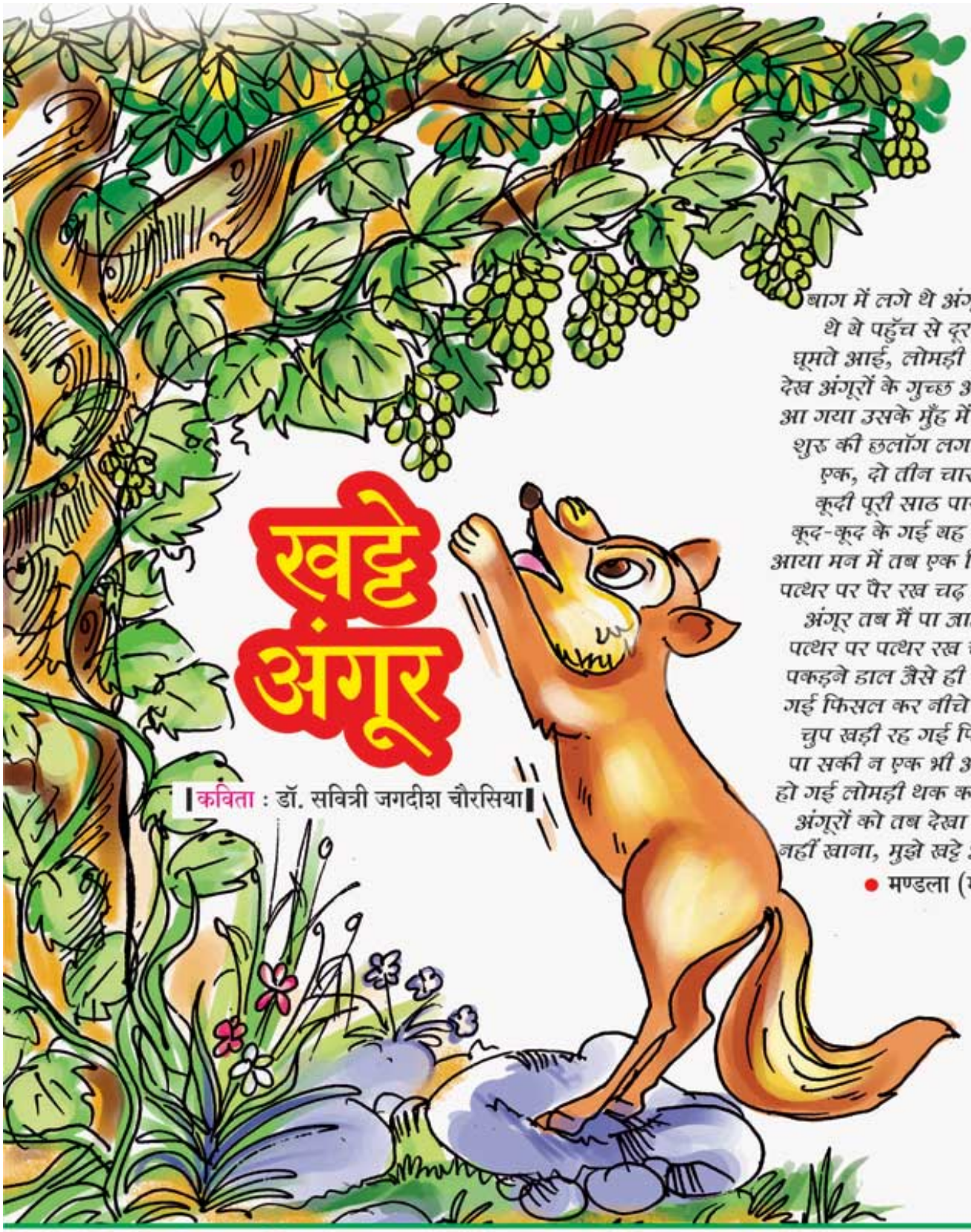

खट्टे अंगूर

कविता : डॉ. सवित्री जगदीश चौरसिया

बाग में लगे थे अंगूर,
थे वे पहुँच से दूर।
घूमते आई, लोमड़ी एक,
देख अंगूरों के गुच्छ अनेक।
आ गया उसके मुँह में पानी,
शुरू की छलाँग लगानी।
एक, दो तीन चार,
कूदी पूरी साठ पार।
कूद-कूद के गई वह हार,
आया मन में तब एक विचार।
पत्थर पर पैर रख चढ़ जाऊँ,
अंगूर तब मैं पा जाऊँ।
पत्थर पर पत्थर रख चढ़ी,
पकड़ने डाल जैसे ही बढ़ी।
गई फिसल कर नीचे गिर,
चुप खड़ी रह गई फिर।
पा सकी न एक भी अंगूर,
हो गई लोमड़ी थक कर चूर।
अंगूरों को तब देखा घूर,
नहीं खाना, मुझे खट्टे अंगूर।

● मण्डला (म.प्र.)

सही उत्तर || देवपुत्र प्रश्नमंच ||

(१) आ (२) इ (३) अ (४) अ (५) इ (६) आ
(७) आ (८) अ (९) इ (१०) आ (११) अ (१२) आ

Digital India
Power To Empower

डि
डिजि

मध्यप्रदेश में डिजिट

सहूलियतें आपके लिए :

- डिजिटल लॉकर
- एम.पी. मोबाइल एप के जरिये 120 सेवाएँ
- सरकारी काम-काज में तेजी के लिये एम.पी. ई-मेल सेवा
- 400 से अधिक वर्चुअल क्लास रूम की सुविधा
- 60 लाख, 40 हजार से ज्यादा डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र जारी
- लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 22 विभाग की 135 सेवाएँ
- एस.एम.एस. गेटवे के जरिये 9 करोड़ से अधिक एस.एम.एस.
- जी.आई.एस. लैब स्थापित।

और अब

- कम्प्यूट
  शुरुआत
- ई-शक्ति
- लगभग
- ई-दक्ष
- ई-ऑफि
- एक क्लि
- ई-ऑक्श

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

जेटल इंडिया
टल मध्यप्रदेश

ल इंडिया की पहल

नई पहल

र दक्षता प्रमाणीकरण परीक्षा (CPCT) की

अभियान के द्वितीय चरण की शुरुआत
1 करोड़ महिलाओं को मिलेगा लाभ

स
लक पर संपत्ति का पंजीयन
ान से रेत की नीलामी।

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

R.O. No. D- 79660

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2015

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. प्रेम भारती द्वारा रचित बाल साहित्य की अनमोल कृतियां

हमारे इतिहास पुरूष

६ कालजयी महान चरित्रों पर प्रकाश डालती पुस्तक

मूल्य ५०/-

जो अपने लिए नहीं औरों के लिए जिए

७ कालजयी महान चरित्रों पर प्रकाश डालती पुस्तक

मूल्य ५०/-

प्रकाशक- मधूलिका प्रकाशन, १९० बी/१०, राजरूपपुर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

कछुआ उड़ा आकाश में

६ मनोरंजक और शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ

प्रकाशन

आचार्य प्रकाशन

१९०बी/१०, राजरूपनगर, इलाहाबाद

मूल्य ४५/-

ताली बजाएं रोग भगाएं

ताली बजाने का स्वास्थ्य पर क्या सुप्रभाव होता है बताने वाली पुस्तक

प्रकाशन

मयंक प्रकाशन

डाड़ी पोस्ट - संगरा सुन्दरपुरा, प्रतापगढ़

मूल्य ५०/-

वृन्दावन का राजकुमार

भगवान श्रीकृष्ण की प्राचीन कथाओं को नए संदर्भों के साथ सुगमता से प्रस्तुत करती अनूठी कृति

प्रकाशन - मालविका प्रकाशन,

२१८९/९० बी/१० सेक्टर नं. २१, ओमप्रकाश सभासद नगर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

मूल्य २५०/-

प्रख्यात बाल साहित्य सर्जक एवं समीक्षक डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' की २ कृतियां

ढेढापुल

माता पिता के आपसी मनमुटाव का सन्त्रास झेलते बचपन की मार्मिक कथा प्रस्तुत करता बाल उपन्यास

प्रकाशन - विभा प्रकाशन

५०, चाहचन्द (जीरो रोड़) इलाहाबाद २११००३ (उ.प्र.)

मूल्य१५०/-

बाल साहित्यः सृजन और समीक्षा

बाल साहित्य में समकालीन सर्जना पर निष्पक्ष समालोचना प्रस्तुत करती डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' की समीक्षा पुस्तक

प्रकाशन - विनायक पब्लिकेशन्स

मूल्य २००/- ५३/५० चाहचंद (जीरो रोड़), इलाहाबाद २११००३ (उ.प्र.)

पटाखे

कविता : डॉ. फहीम अहमद

गूंज रहे हैं गली मुहल्ले
दगते धूम-धड़ाम पटाखे।

अरे सम्हल कर इन्हें जलाओ
जल जाएँ तो पास न जाओ।
भैया हमको यह समझाएं
रहो सुरक्षित, मौज मनाओ।

बरती अगर सावधानी तो
खुशियों का पैगाम पटाखे।

शोर मचाते बच्चे सारे
धूम-धड़ाका खूब मचा रे।
दगे पटाखे, बजे तालियाँ
छूटे खुशियों के फव्वारे।

हंसी खुशी से भरे लबालब
बाँट रहे ईनाम पटाखे।

ज्यादा जो जल गए पटाखे
फैले चारों तरफ धमाके।
और प्रदूषण फैलेगा तब
इसे चलाओ जरा बचा के।

ध्यान रहे इन बातों का भी
कहीं न हों बदनाम पटाखे।

● लखनऊ (उ.प्र.)

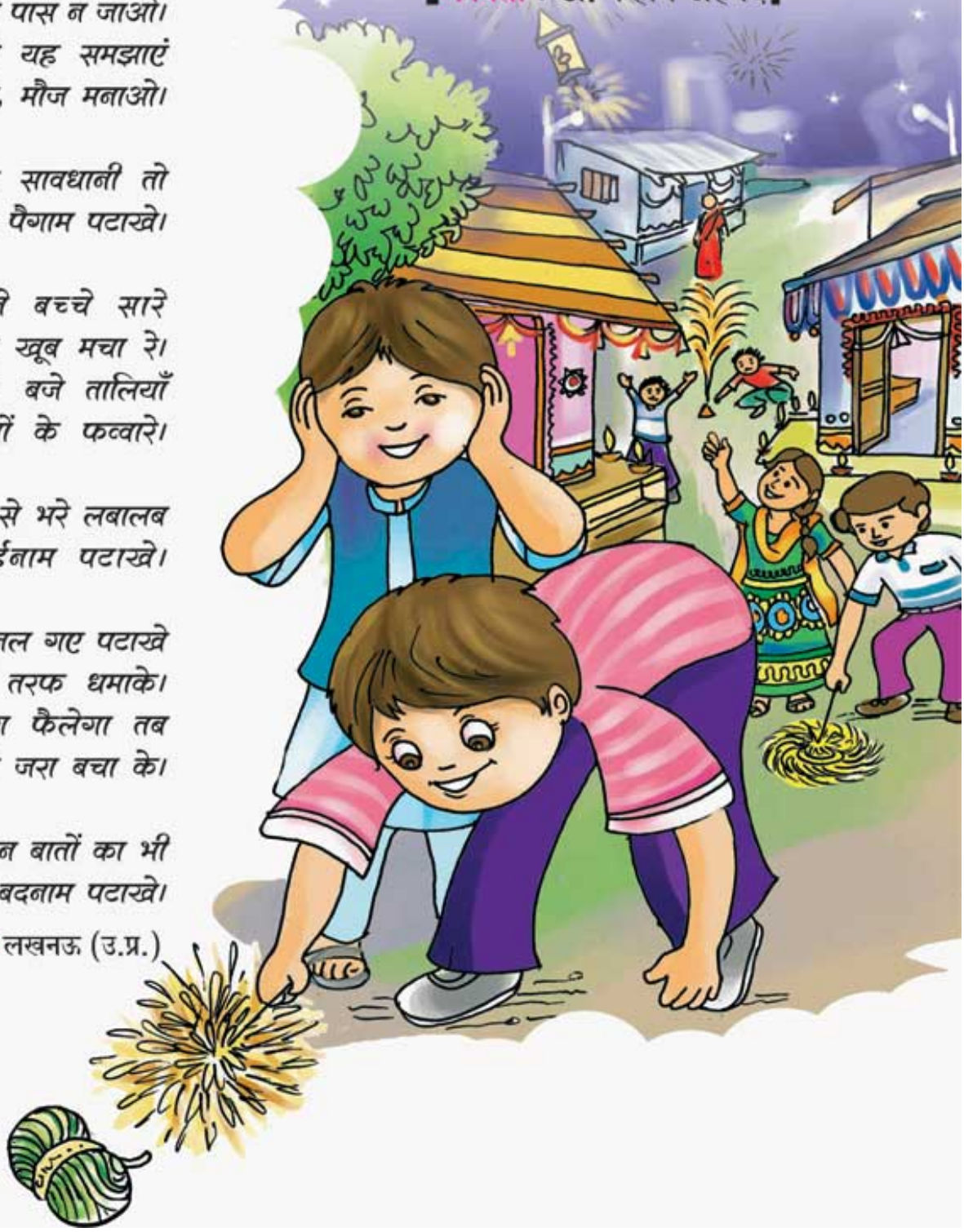

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./623/2015-2017 आर.एन.आय. पं. क्रं. 38577/85

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

▶ संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
▶ एक अंक	१५/-
▶ वार्षिक सदस्यता	१५०/-
▶ त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
▶ पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
▶ आजीवन सदस्यता	११००/-

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना